जुलाई 2016

दादावाणी

कीमत ₹ 10

इस जगत् में जिसकी सर्वस्व प्रकार की भीख खतम हो गई हो, उसके हाथ में तमाम सत्ता दी जाती है। अभी मेरे हाथ में सत्ता आ चुकी है, क्योंकि मेरी सर्वस्व भीख छूट गई है।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 11 अंक : 9
अखंड क्रमांक : 129
जुलाई 2016

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानी की प्योरिटी झलके जीवन व्यवहार में

संपादकीय

रोज़ सुबह सूर्योदय सिर्फ पूर्व दिशा में ही होता है लेकिन उसके तेज से चारों दिशाएँ प्रफुल्लित, प्रकाशित और जीवंत हो जाती हैं। सूर्य को अपना परिचय देना नहीं पड़ता, उसका प्रकाश सहजता से ही उसका परिचय दे देता है। उसी प्रकार प्रकट ज्ञानीपुरुष भी एक ऐसा जीवंत तत्त्व हैं, जिनका ज्ञानप्रकाश शब्दों की मर्यादा में नहीं नापा जा सकता।

प्रत्येक महात्मा को अवश्य ही, ज्ञानीपुरुष परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) के निकट समागम से, उनके सादे सरल और सहज व्यक्तित्व में, आध्यात्म की सागर समान असाधारण गहराई, मेरू पर्वत जैसी स्थिरता, सूर्य जैसा प्रताप और चंद्र जैसी सौम्यता का अनुभव होता है। जो महात्मा एक बार भी दादाश्री से मिले हैं, उनके स्मृति पटल पर से दादा भुलाए नहीं जाते। महात्मा चाहे दुनिया के किसी भी कोने में रहें, उनका चित्त दादाश्री की और खिंचता ही रहता है। उनकी उपस्थिति ही सभी के हृदय को ठंडक पहुँचाती हैं। लेकिन इस आकर्षण का रहस्य क्या है? दादाश्री ही कहते थे कि हमारी 'प्योरिटी' ही दुनिया को आकर्षित करती है।

दादाश्री के जीवन की घटनाओं का अवलोकन करते हुए समझ में आता है कि उनके बचपन से ही व्यवहार में नीति, ईमानदारी और स्थूल प्योरिटी देखने को मिलती है। व्यवहार में समझें तो प्योरिटी शब्द की शुरुआत ईमानदारी से होती है और अगर गहरा तात्विक मर्म समझें तो शुद्धता की ओर ले जाती है। कषाय-विषय रहित दृष्टि ही प्योरिटी है। अपने यहाँ अक्रम में महात्माओं के लिए लक्ष्मी और विषय की प्योरिटी को बहुत ही महत्व दिया गया है। मान की प्योरिटी में अभी भी दु:ख दे देते हैं लेकिन खुद जागृत हैं और दोषों के प्रतिक्रमण करते हैं। अत: निश्चय में प्योरिटी हो गई है। लेकिन दादाश्री हमें ज्ञान के साथ-साथ व्यवहार में भी प्योरिटी लाने की सलाह देते हैं।

इसका मापदंड क्या है कि महात्मा यथार्थ रूप से साधना की सीड़ी चढ़ रहे हैं? ज्ञानी क्या कहते हैं कि 'तू चाहे कुछ भी कर, तप कर, जप कर, शास्त्रों के शास्त्र धारण कर ले, रात-दिन गुरु की सेवा कर लेकिन यदि तेरे क्रोध-मान-माया-लोभ निर्मूल अथवा मंद नहीं हुए हैं तो तेरी राह आत्यंतिक मुक्ति की नहीं है, प्योरिटी की नहीं है।'

प्रस्तुत अंक में दादाश्री के जीवन में स्पर्श हुई स्थूल-सूक्ष्म प्योरिटी की एक झलक दिखाई गई है। यों तो वाणी, ज्ञानी की प्योरिटी का वर्णन करने में असमर्थ है लेकिन महात्माओं के लिए प्योरिटी का अर्थ, अहंकार को विलय करने का प्रोसेस है। अंतिम जागृति से अहंकार और बुद्धि भी खत्म हो जाएँगे तब ट्रान्सपेरेन्सी आएगी। इस प्योरिटी से ही जगत् का कल्याण होगा। एक मात्र शुद्ध, प्योर होने का भाव ही मुख्य ध्येय तक ले जाएगा।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

ज्ञानी की प्योरिटी झलके जीवन व्यवहार में

जब कुछ भी नहीं चाहिए, तब प्योर हो सकता है

प्रश्नकर्ता : दादा, यहाँ आपके पास हमें घर या अन्य कोई भौतिक चीज़ याद नहीं आती।

दादाश्री : यहाँ पर किसी भी तरह के मोह की भूमिका नहीं है न, अत: निर्लेप बनाती है! क्या बनने की इच्छा है तेरी?

प्रश्नकर्ता : प्योर, शुद्ध।

दादाश्री : प्योर, शुद्ध! अन्य कोई इच्छा नहीं है? किसी भी प्रकार की नहीं है? होगी अंदर, अच्छा खाना मिले या ऐसा कुछ?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसी कोई इच्छा नहीं है। प्योर बन जाना है, बस।

दादाश्री : अन्य कोई इच्छा? किसी भी प्रकार की नहीं है? तो फिर तू जो नौकरी करने गया, वह क्या है?

प्रश्नकर्ता : वह सारा फाइलों का निकाल है। प्योर होना ही मेरे डिसिज़न में है न दादा।

दादाश्री : ओहो! तो फिर कम्पलीट हो जाएगा। उसका परीक्षण किया है क्या?

प्रश्नकर्ता : 'अंदर कौन-कौन सी इच्छाएँ हैं, वह सब परखना है। परखना है कि शुद्ध होने की ही इच्छा है न' इस बात का अर्थ समझाइए न ज़रा?

दादाश्री : घी को अगर अच्छी तरह से तपाया न हो, तो फिर अंदर जो तलछट (तपाए हुए घी की तलछट) होती है न, वह सारी खट्टी होती है। तब उसे फिर से तपाते हैं। फिर तपाने से वह शुद्ध हो जाती है। परखना चाहिए कि उस तलछट में खट्टापन है या नहीं।

कैसे परखना है?

प्रश्नकर्ता : प्योर हुए हैं, ये किस तरह से परखना है?

दादाश्री : ले! अरे, उसका तरीका ढूँढ रहा है! अंदर आत्मा है, थर्मामीटर जैसा। सबकुछ पता चलता है, बुखार कितना चढ़ा या उतरा है! कैसी नीयत है, इसका पता नहीं चलता क्या?

प्रश्नकर्ता : पता चलता है दादा, लेकिन बहुत जागृति नहीं है न! यों कुछ पता चलता है लेकिन कुछ यों ही निकल जाता है। ऐसा ही है न सारा!

दादाश्री : यह तो सिर्फ तुझे ही ऐसा है या बाकी सभी को ऐसा थोड़े ही रहता है? तुझे अंदर पता चलता है या नहीं चलता?

प्रश्नकर्ता : जब अंदर से कई तरह की गाँठे फूटती हैं तो पता चलता है कि इसे अभी इस तरफ का चारित्रमोह है।

दादाश्री : गाँठे फूटती हैं, वह नहीं, गाँठे

भले ही फूटें, गाँठे फूटना तो डिस्चार्ज है। लेकिन अंदर इच्छाएँ होती हैं? 'यह ऐसी चीज़ चाहिए,' अभी ऐसी भीख रहती है। चीज़ें हों इसमें हर्ज नहीं है लेकिन भीख रखने में हर्ज है। भीख रहती है अंदर क्या? भीख का तो तुरंत ही पता चल जाता है न।

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्म में रहती हों तो पता नहीं। यों बाहर दिखाई नहीं देतीं लेकिन अंदर ज़रा-ज़रा सी रहती हों तो मुझे पता नहीं।

दादाश्री : ज़रा-ज़रा सी हो तो भी क्या पता नहीं चलेगा? भीख का तो तुरंत ही पता चल जाता है। तुझे भीख नहीं है क्या किसी चीज़ की?

भेद, चारित्रमोह और भीख में

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। विषयों की, मान की, सभी की भीख दिखाई देती है। लेकिन चारित्रमोह और आप जिसे भीख कहते हैं, उन दोनों में क्या फर्क है, ये पता नहीं चलता।

दादाश्री : चारित्रमोह *निकाली* है, डिस्चार्ज है जबकि भीख से इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं। उपयोग हमेशा भीख में ही रहता है। पूरा उपयोग भीख में ही चला जाता है जबकि चारित्रमोह में उपयोग जागृति रहती है।

प्रश्नकर्ता : दादा! तो फिर भीख किसे कहते हैं?

दादाश्री : कोई भी इच्छा भीख कहलाती है। ऐसी इच्छा करना कि इन लोगों से मुझे मान मिलेगा, तो वह भीख है। ये सब तो ऐसी भीख के लिए निकले हैं। खुद का पेट भरने निकले हैं। हर कोई पेट भरने निकला है।

इसीलिए मैंने 'भीख' शब्द लिखा है। और कोई नहीं लिखेगा। वे 'तृष्णा' लिखते हैं। अरे, भीख लिख न! तभी उसका भिखारीपन छूटेगा! तृष्णा का क्या अर्थ है? तृष्णा अर्थात् प्यास। अरे, प्यास तो लगे या न लगे, उसमें क्या परेशानी है? अरे, यह तो तेरी भीख ही है! जहाँ भीख होती है वहाँ भगवान कैसे मिल सकते हैं? यह 'भीख' शब्द ही ऐसा है कि बिना फाँसी चढ़े ही फाँसी लगा दे!

भीख कितने प्रकार की होती होगी? मान की भीख, लक्ष्मी की भीख, विषयों की भीख, शिष्यों की भीख, मंदिर बनवाने की भीख, अपमान न हो उसकी भीख। सभी प्रकार की भीख, भीख और भीख! ऐसे में अपनी दरिद्रता कैसे जाएगी?

ग्राहक की भीख की वजह से दलालों की कमाई

हम अगर भीखारी के पास जाएँ तो, न तो वह खुद सुधरा हुआ होता है और नहीं हमें सुधार सकता है। क्योंकि इन लोगों ने ऐसी दुकाने शुरू की हैं और ग्राहक भी इन्हें आराम से मिल जाते हैं!

एक व्यक्ति मुझसे कह रहा था कि 'इसमें दुकानदारों का दोष हैं या ग्राहक का?' मैंने कहा 'ग्राहक का दोष है।' दुकानदार तो चाहे कोई भी दुकान लगाकर बैठे लेकिन हमें नहीं समझना चाहिए क्या? मछुआरा काँटे में आटे की गोली लगाकर और उसे तालाब में डालता है, इसमें दोष मछुआरा का है या खानेवाले का? जिसे ऐसा लालच है, उसका दोष है या मछुआरे का? जो पकड़ में आ जाए, दोष उसी का है!

लोगों को पूजे जाने की इच्छा है इसलिए संप्रदाय बना दिए। इसमें सिर्फ इन ग्राहकों का दोष नहीं है, बेचारों का। दलालों का भी दोष है। इन दलालों का पेट ही नहीं भरता है और दुनिया का भरने नहीं देते हैं। इसलिए मैं इसे उजागर करना चाहता हूँ। ये लोग तो दलाली में ही मोज-मस्ती करते हैं। खुद की सेफसाइड ढूँढ ली है। हम दु:ख देने या दिलवाने नहीं आए हैं।

हमें तो ये समझने की ज़रूरत है कि कमी कहाँ पर है? अब, दलाल क्यों होते हैं? क्योंकि ग्राहकी मज़बूत हैं। अगर ग्राहक नहीं होगें तो दलाल कहाँ जाएँगे? चले जाएँगे। लेकिन मूलतः तो ग्राहक का दोष हैं न! अर्थात् मूल दोष तो हमारा ही है! दलाल कब तक रहेंगे? ग्राहक हो तभी तक। अभी इन मकानों के दलाल कब तक चलते रहेंगे? मकानों के ग्राहक होंगे, तभी तक। वर्ना बंद!

जहाँ-तहाँ व्यापार है। जहाँ पैसे का लेन-देन हुआ और दूसरा कुछ घुसा, वह सब व्यापार है। उसमें सांसारिक लाभ उठाने की तैयारी होती है। ये सब भौतिक लाभ तो व्यापार कहलाते हैं। और कुछ नहीं है लेकिन मान की इच्छा हो, तो वह भी लाभ ही कहलाता है। सभी व्यापार ही कहलाते हैं।

ध्येय चूका कि घुसी भीख

प्रश्नकर्ता : दादा, अच्छे काम करने से भी भीख घुसती है क्या?

दादाश्री : अगर पेट नहीं भरना हो तो कीर्ति पानी होती है। कीर्ति की भीख, लक्ष्मी की भीख, मान की भीख! और कुछ नहीं तो मंदिर बनवाने की भीख रहती है। तो मंदिर बनवाने में पड़ जाता है! क्योंकि और कोई तब व्यापार न मिले तो कीर्ति के लिए ही सबकुछ करने लगता है! अरे, मंदिर किसलिए बनवा रहे हो? क्या हिंदुस्तान में मंदिर नहीं है? लेकिन ये तो मंदिर बनवाने के लिए पैसे इकट्ठे करते हैं। भगवान ने कहा था कि 'अगर मंदिर बनवानेवाले के कर्म का उदय होगा तो ही बनवाएँगे, तू क्यों पड़ रहा है उसमें?'

हिंदुस्तान का मनुष्यधर्म सिर्फ मंदिर बनवाने के लिए नहीं है। हिंदुस्तान में जन्म मोक्ष में जाने के लिए ही होता है। एक अवतारी हो सके, ऐसा ध्येय रखकर काम कर, तो 50 जन्मों में, 100 जन्मों में या 500 जन्मों में हल आ ही जाएगा। दूसरे सभी ध्येय छोड़ दो। शादी करना, बच्चों का बाप बनना, डॉक्टर बनना, बंगले बनवाना, इसमें हर्ज नहीं है। लेकिन ध्येय इस एक ही जगह पर रख, कि हिंदुस्तान में जन्म हुआ है तो मुक्ति के लिए साधन कर लेना है। इस एक ध्येय पर आ जाओ तो हल आ जाएगा!

सर्व भीख से मुक्त ज्ञानी

किसी प्रकार की भीख नहीं होनी चाहिए। इस तरह धर्म के लिए दान लिखवाओ, फलाँ लिखवाओ, ऐसी वैसी अनुमोदना में हाथ नहीं डालना चाहिए। करना, करवाना और अनुमोदन करना नहीं होना चाहिए। हम तो सर्व प्रकार की भीखों से मुक्त हो चुके हैं। मंदिर बनवाने की भी भीख नहीं है क्योंकि हमें इस जगत् की कोई भी चीज़ नहीं चाहिए। हम मान के भिखारी नहीं हैं, कीर्ति के भिखारी नहीं हैं, लक्ष्मी के भिखारी नहीं हैं, सोने के भिखारी नहीं हैं, शिष्यों के भिखारी नहीं हैं। हमें विषयों के विचार नहीं आते, लक्ष्मी के विचार नहीं आते। जहाँ विचार ही उत्पन्न नहीं होते, वहाँ फिर भीख किस चीज़ की रहेगी?

मनुष्य मात्र को कीर्ति की भीख तो रहती है, मान की भीख भी रहती है। अगर हम पूछें कि आपको पता चलता है, आपमें कितनी भीख है? क्या आपमें किसी भी प्रकार की भीख है?' तब आप कहेंगे, 'नहीं, भीख नहीं है।' अरे! अभी कोई अपमान कर दे तो पता चल जाएगा कि मान की भीख है या नहीं!

हो सकता है कि स्त्री संबंध में ब्रह्मचारी हो गया हो, लक्ष्मी संबंधी भीख भी छोड़ दी हो, लेकिन ये बाकी सभी भीखें तो रहती हैं। कीर्ति की भीख होती है, शिष्य की भीख होती है, नाम

कमाने की भीख होती है, ऐसी अपार भीखें होती हैं। शिष्य की भी भीख! कहेंगे कि, 'मेरे पास शिष्य नहीं हैं।' जबकि शास्त्रों ने क्या कहा है? 'खोजे बिना जो अपने आप आ मिले, वही शिष्य है!'

भीख मिट जाए तो 'जगत् ज्यों का त्यों दिखाई देगा'

संपूर्णत: भीख जाने के बाद ही यह जगत् 'जैसा है वैसा' दिखाई देता है। जब तक मुझमें भीख होगी, अन्य कोई भिखारी नहीं लगेगा। लेकिन अपनी भीख गई, तब सभी भिखारी ही भिखारी लगेंगे।

भिखारियों ने ही इस दुनिया को लूटा है। यदि एक भी व्यक्ति भीख रहित होता, तो जगत् का कल्याण ही हो जाता! इस जगत् में जिसकी सर्वस्व प्रकार की भीख चली जाती है, तमाम सत्ता उसके हाथ में दी जाती है।

अभी मेरे हाथ में सत्ता आ चुकी है क्योंकि मेरी सर्वस्व भीख छूट गई है। जो यश के भूखे नहीं होते, उन पर देवी-देवता राज़ी रहते हैं। पूरा जगत् राज़ी हो सकता है लेकिन अपनी भूख है न इसलिए राज़ी नहीं होता। जहाँ भीख है वहाँ भगवान हो ही नहीं सकते। भीख छूटेगी तो दिन बदलेंगे। भीख रहित इंसान से जो माँगे वह प्राप्त हो जाता है। अत: यह झंझट तो भीख की वजह से है। प्योरिटी ही नहीं रही।

मोक्ष में जाने के लिए ज़रूरत है प्योरिटी की

प्रश्नकर्ता : दादा, प्योरिटी का अर्थ क्या है?

दादाश्री : किसी भी परमाणु में राग नहीं रहे, द्वेष नहीं रहे, राग-द्वेष न रहे। जिसमें राग-द्वेष नहीं है, वे प्योर होते हैं।

प्रश्नकर्ता : राग का एक भी परमाणु नहीं हो, यह तो बहुत ही बड़ी बात है!

दादाश्री : हाँ, यदि एक भी परमाणु बाकी रहा तो दृष्टि सम्यक कैसे हो पाएगी?

यदि मोक्ष में जाना हो तो गलत-सही के द्वंद्व निकाल देने पड़ेंगे। यदि शुभ में आना हो तो गलत चीज़ का तिरस्कार करो और अच्छी चीज़ पर राग करो। शुद्ध में तो अच्छे-बुरे दोनों पर राग-द्वेष नहीं करते। वास्तव में तो कुछ भी अच्छा-बुरा है ही नहीं। दृष्टि की मलिनता के कारण यह अच्छा-बुरा दिखाई देता है और दृष्टि की मलिनता, वही मिथ्यात्व है, दृष्टिविष है। हम (आत्मज्ञान प्रदान करके) उस दृष्टिविष को निकाल देते हैं। जो ज्ञान राग-द्वेष रहित है वह शुद्ध ज्ञान कहलाता है।

सादी भाषा में कहा जाए तो तेरे घर में अगर तेरी शिकायत होने लगे, तो ऐसा समझना है कि तुझमें प्योरिटी नहीं है। मोक्ष में जाना हो तो प्योरिटी की ज़रूरत पड़ेगी। मन-वचन-काया से किसी को दु:ख हो जाए तो वही इम्प्योरिटी कहलाती है।

जितनी स्वच्छता, उतनी दुनिया आपकी

प्रश्नकर्ता : दादा, क्या प्योरिटी का मतलब अंदर की स्वच्छता ही है?

दादाश्री : स्वच्छता अर्थात् इस दुनिया की किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं, भिखारीपना है ही नहीं! इस दुनिया में जितनी आपकी स्वच्छता, उतनी दुनिया आपकी! आप मालिक हैं इस दुनिया के! 26 सालों से मैं इस देह का मालिक नहीं हूँ, इसलिए हमारी संपूर्ण स्वच्छता है! तो स्वच्छ हो जाओ, स्वच्छ!

अंदर साफ, वही प्योरिटी की शुरुआत

प्रश्नकर्ता : दादा! प्योरिटी की शुरुआत किस तरह से होती है?

दादाश्री : यह शुरुआत ही है न! यह आपमें, आप्तपुत्रों में शुरुआत ही है न! क्या आपको लगता है कि प्योरिटी हो रही हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा लगता तो है कि हो रही है। आप्तपुत्रों में अभी आंतरिक प्योरिटी कहलाए या फिर बाह्य भी कहलाए?

दादाश्री : आंतरिक प्योरिटी ही बाह्य प्योरिटी लाती है, अंतर में से ही बाहर आती है। 'बाहर बिगड़े तो भले ही बिगड़ जाए लेकिन भीतर नहीं बिगड़ने देना।' जब कर्ज़ चुकाने की सुविधा न हो तब अंदर शुद्ध रखना चाहिए कि 'देना ही है' अंदर नहीं बिगाड़ने दिया तभी उधार चुका पाओगे। हमें शुद्ध हो जाना चाहिए। हम अगर शुद्ध हो गए तो बाकी सबकुछ शुद्ध हुए बगैर रहेगा ही नहीं।

नीयत साफ वहाँ लाइन क्लिअर

प्रश्नकर्ता : साफ नीयत का मतलब क्या है? और साफ नीयत नहीं होना उसका मतलब क्या है?

दादाश्री : जिसकी नीयत साफ हो उसका इस दुनिया में कोई भी काम पूर्ण हुए बगैर नहीं रहता। नीयत साफ हो तो सांसारिक काम पूर्ण होते हैं और आध्यात्मिक काम भी पूर्ण होते हैं। नीयत अच्छी हो तो यह है क्लिअर रेल्वे लाइन! और अगर नीयत साफ नहीं है तो उसका ठिकाना ही नहीं पड़ेगा। ऐसी गाड़ी कौन से गाँव पहुँच जाएगी, कहा ही नहीं जा सकता! नीयत साफ नहीं होगी तो बरकत आएगी ही नहीं।

साफ नीयत अर्थात् कम्प्लीट मोरालिटी सहित सिन्सियारिटी, उसकी तो बात ही निराली है! नीयत साफ हो तो इस दुनिया में कोई भी चीज़ मुश्किल नहीं है।

सिन्सियारिटी से शुरू होती है प्योरिटी

प्रश्नकर्ता : दादा के प्रति जितनी सिन्सियारिटी है, क्या उसी के परिणाम स्वरूप प्योरिटी आएगी।

दादाश्री : सिन्सियर अर्थात् तन-मन-वचन से सच्चे, और फिर वे गुरू के प्रति भी सिन्सियर ही रहते हैं। यदि गुरु के डाँटने पर भी उसकी सिन्सियारिटी कम न हो, तो वह मोक्ष में जाएगा ही।

सिन्सियर अर्थात् उसके लिए तो अंत:करण की कितनी एकता चाहिए! जिसे दिल से कहते हैं न! दिल अर्थात् अंत:करण की एकता! फिर मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सब एक ही तरफ रहते हैं, अन्य विरोधाभास नहीं होता। किसी को पता न लगे फिर भी तू दुनिया के लिए अच्छा कर रहा है, तो भी लोग जान ही जाएँगे। यह दुनिया का सब से बड़ा नियम है, कि सामनेवाला चाहे कितना भी बड़ा दगा करे तब भी तुझे सिन्सियर रहना है, वही पार उतरने की कूँजी है!

मोरल अर्थात् किसी के प्रति मन ज़रा सा भी न बिगड़े। इन्द्रिय विषयों में या क्रोध-मान-माया-लोभ, किसी में भी मन ज़रा सा भी न बिगड़े तो वह मोरल कहलाता है।

मैं आपको कहता ही नहीं कि 'आप ऐसा करो, अच्छा करो, या ऐसे बन जाओ। मोरल बन जाओ'। मैं तो रास्ता दिखाता हूँ कि 'मोरल कैसे हुआ जाता है।' जबकि लोगों ने क्या किया है? 'यह रकम और यह जवाब।' अरे, तरीका सिखा न! रकम और जवाब तो किताब में लिखे हुए हैं ही, लेकिन उसका तरीका सिखा न! लेकिन तरीका सिखानेवाला कोई निकला ही नहीं। तरीका सिखानेवाला निकला होता तो हिंदुस्तान की यह दशा नहीं हुई होती।

अगर यह सत्संग दिल से किया जाए न,

तब भी बहुत हो गया समझो। ज्ञानीपुरुष के प्रति जितनी सिन्सियारिटी रहेगी, उतना ही अपना स्वरूप प्रकट होता जाएगा। प्योर को याद करने से प्योर बनते हैं और इम्प्योर को याद करने से इम्प्योर बनते हैं। जिसकी भक्ति करते हैं न, उसी के रूप होते जाते हैं।

परिवर्तन दिखाई दे तो हृदय में उतरता है

प्रश्नकर्ता : अपनी प्योरिटी किस हद तक की है, इसका पता कैसे चलता है?

दादाश्री : यह सब खुद को पता चलता है। जैसे-जैसे गहराई में उतरता जाएगा वैसे-वैसे सब पता चलता जाएगा। पहले तो जितना आँखों से दिखाई देता है, उतना ही भाग देख पाता है। उसके बाद और गहरे उतरने पर फिर आगे का दिखता जाता है। इसके अलावा प्योरिटी के बारे में पता है, भान है, पूरा।

प्रश्नकर्ता : हम महात्माओं की प्योरिटी कितनी कहलाती है?

दादाश्री : यह प्योरिटी ही है, यह तो प्योर ही है। वर्ना तो शुद्धात्मा याद ही न रहे, वर्ना तो स्मरण करना पड़ता। स्मरण किया हुआ विस्मरण हो जाता है जबकि यह विस्मृत ही नहीं होता, याद ही आता रहता है। जितनी प्योरिटी उतना ही वह याद आता है।

और जो व्यक्ति (ज्ञानी) खुद प्योर रहता है, वह लोगों के हृदय में बस जाता है। याद ही आता रहता है और उससे उनका (याद करनेवालों का) रक्षण होता रहता है। (लोगों को वे प्योर ज्ञानी) निरंतर याद आते हैं उसकी वजह है प्योरिटी, ट्रान्सपेरेन्सी (पारदर्शकता)। उसी वजह से ज्ञानी की *पुद्गल* शक्ति ट्रान्सपेरेन्ट हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : वह प्योरिटी जब सामनेवाले के हृदय में बस जाती है तो क्या उसके हृदय को बदल देती है?

दादाश्री : खुद (ज्ञानी) में परिवर्तन आने के बाद ही तो उसमें (सामनेवाले व्यक्ति में) बस जाते हैं। सामनेवाले को कब याद आते हैं? जब खुद में परिवर्तन हो जाता है तब।

यों अनुभव की जाती है ज्ञानी की प्योरिटी

प्रश्नकर्ता : ज्ञानीपुरुष की प्योरिटी, निर्मलता किस तरह से अनुभव की जा सकती हैं?

दादाश्री : उनकी सुगंध ही ऐसी होती है कि पहचानी जा सके। उनके आसपास का वातावरण कुछ और ही प्रकार का होता है! उनकी वाणी कुछ और ही प्रकार की होती है! उनके शब्दों से पता चल जाता है। अरे! उनकी आँखें देखकर ही पता चल जाता है। बाकी, ज्ञानी के पास अत्यंत विश्वसनीयता होती है ज़बरदस्त विश्वसनीयता! और उनका हर शब्द, यदि समझ में आ जाए तो शास्त्ररूपी होता है! उनके वाणी-वर्तन और विनय मनोहर होते हैं, मन का हरण करनेवाले होते हैं। यानि कि ऐसे बहुत सारे लक्षण होते हैं।

ज्ञानीपुरुष तो, हज़ारों सालों में एकाध पैदा होते हैं। शास्त्रज्ञानी तो अनेक होते हैं लेकिन आत्मा के ज्ञानी नहीं होते। जो आत्मा के ज्ञानी होते हैं न, वे तो परम सुखी होते हैं, उन्हें किंचित्मात्र भी दुःख नहीं रहता। इसीलिए वहाँ पर अपना कल्याण हो जाता है। जो खुद अपना कल्याण करके बैठे हैं,वे ही हमारा कल्याण कर सकते हैं। जो खुद पार उतर चुके हैं, वे हमें पार उतार सकते हैं। वर्ना जो खुद ही डूब रहा हो, वह कभी भी औरों को पार नहीं उतार सकता।

दखल वही करता है जिसे कुछ चाहिए,

मान-तान वगैरह कुछ चाहिए। जिसमें क्रोध-मान-माया-लोभ हों उन्हें देखकर उल्लास नहीं आता। हमें कुछ चाहिए ही नहीं। आपको सुधारते हैं लेकिन अन्य कोई दखल करने नहीं आए। ज्ञानी किसे कहते हैं कि जिनमें सांसारिक प्रवृत्ति नहीं होती, क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते। जो वीतराग हो चुके हैं वे 'ज्ञानी' कहलाते हैं।

हमारी आँखों में अन्य कोई भाव दिखाई नहीं पड़ता, इसलिए लोग दर्शन करते हैं। किसी भी प्रकार का खराब भाव आँखों में नहीं पढ़ा जा सके, तभी उन आँखों को देखते ही समाधि का अनुभव होता है! कोई व्यक्ति ट्रान्सपेरेन्ट हो ही नहीं सकता। सिर्फ ज्ञानीपुरुष ही ट्रान्सपेरेन्ट होते हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या एकदम से ट्रान्सपेरेन्ट नहीं हो सकते दादा?

दादाश्री : एकदम से तो कोई हो ही नहीं सकता न! वह तो, जब किसी को प्योर होते हुए देखता है, तब उस पर कृपा उतरती है। आपको प्योर होते ही जाना है। हमारा मन प्योर है, बुद्धि प्योर है, अहंकार प्योर है। हम तो प्योरिटी के शिखर पर बैठे हैं। आपको भी तो प्योर होना ही पड़ेगा न?

औरों के लिए स्वाहा हो जाए, वहाँ पर प्योरिटी

प्रश्नकर्ता : प्योरिटी का पता कैसे चलता है?

दादाश्री : प्योर चेतन, सर्कल (सांसारिक अवस्थाएँ) से बाहर खड़ा है। उसकी उपस्थिति से सब चलता है। उस 'प्योरिटी' का हमें कब पता चलता है? जब सभी सर्कल (सांसारिक अवस्थाओं) को पहचानने लगे तब। सर्कल में मेरेपन न लाए तो प्योर हो जाता है!

अब हमें देह से कहना है, 'तुझे जाना हो तो जा, हम अपने मुकाम पर रहेंगे।' उसके लिए बहुत हाय-हाय नहीं मचानी है। अनंत जन्मों से देह को ही संभालते आ रहे हैं। एक जन्म के लिए देह ज्ञानीपुरुष को सौंप दें और उसका बहुत ध्यान न रखें तो हो जाएगा, शुद्ध हो जाएगा। हमने तो एक क्षण के लिए भी इस शरीर का ध्यान नहीं रखा। एक क्षण के लिए भी हमें ऐसी खबर नहीं रहती कि यह शरीर हमारा है। इस ज्ञान के प्रकट होने के बाद यह शरीर हमारा है ही नहीं, वह पराई चीज़ है। वह पराई चीज़ अपने हाथ में नहीं रह सकती और हमें चाहिए भी नहीं। खुद की वस्तु खुद की है और पराई चीज़ पराई है।

खुद के सुख का नहीं, लेकिन जब यही रहा करे कि सामनेवाले की तकलीफ कैसे दूर हो, तो वहाँ से कारुण्यता की शुरुआत होती है। हमें बचपन से ही सामनेवाले की तकलीफ दूर करने की पड़ी थी। खुद के लिए विचार ही नहीं आए। यह कारुण्यता कहलाती है। उसी से 'ज्ञान' प्रकट होता है।

प्योरिटी की सुगंधि बचपन से ही झलकती है

मैंने बचपन से एक ही बात सीखी थी कि 'भाई तू मुझसे मिला है और उससे यदि तुझे कोई सुख न हो, तो मेरा तुझसे मिलना व्यर्थ है।' मैं लोगों से ऐसा कहता था! वह चाहे कितना भी नालायक आदमी हो, मुझे वह नहीं देखना था। लेकिन 'मैं तुझसे मिला और यदि मेरी तरफ से सुगंधि न आए तो कैसे चलेगा?' यह अगरबती नालायकों को भी सुगंधि देती है या नहीं देती?

प्रश्नकर्ता : सभी को देती है।

दादाश्री : उसी प्रकार यदि मेरी सुगंधि तुझ तक नहीं पहुँचती तो फिर वह मेरी सुगंधि

कहलाएगी ही नहीं। अर्थात् कुछ लाभ तो होना ही चाहिए। पहले से ही मेरा ऐसा नियम रहा है।

मैंने क्या तय किया था कि 'जो सुख मैंने पाया है वैसा ही सुख औरों को भी प्राप्त हो।' यह तो मेरी गरज़ है कि ये लोग सुख प्राप्त करें, मोक्ष में जाएँ। मेरा खुद का वजूद, खुद के लिए नहीं, आपके लिए है।

मेरा हेतु क्या है कि जो सुख मैंने पाया है वह सुख आप भी पाओ। मेरा हेतु पूर्ण हो गया। बस हो गया।

ये 'दादा' तो 'ज्ञानीपुरुष' हैं, इनकी दुकान कैसी चलती है! पूरा दिन! यह दादा की सुख की दुकान है। इसमें अगर कोई पत्थर डाले फिर भी उसे गुलाबजामुन खिलाते हैं। सामनेवाले को थोड़े ही पता है कि यह सुख की दुकान है।

इस होटल में (शरीर से) किसी को भी दुःख नहीं देना, यही मेरा काम है! इसलिए खटमलों को भी भोजन करवाया है। अगर भोजन न करवाएँ तो क्या उसके लिए सरकार हमें दंड देती? नहीं, हमें तो आत्मा प्राप्त करना था। उसके लिए कुछ भी करना बाकी नहीं छोड़ा था! और तब जाकर पूरा 'अक्रम विज्ञान' प्रकट हुआ! जो पूरी दुनिया को स्वच्छ कर दे। ऐसा यह विज्ञान प्रकट हुआ है!

प्योर दृष्टि बनाए सुपर ह्यूमन

एक बार ऐसा हुआ कि रात को जब पिक्चर खत्म हुई, तब रात को 12 बजे मैं एक आदमी के यहाँ गया था। इस पर उस व्यक्ति के मन में आया कि 'कभी इतनी रात गये, 12 बजे तो आते नहीं और आज आये है, ज़रूर कुछ पैसों-वैसों की ज़रुरत होगी?' उसने ऐसा उलटा भाव किया। आपकी समझ में आ रहा है न? मुझे कुछ नहीं चाहिए था। उसकी दृष्टि में मुझे कुछ फर्क नज़र आया। प्रतिदिन की जो दृष्टि थी वह दृष्टि आज बिगडी हुई नज़र आई। मेरी समझ में ऐसा आया। घर जाकर मैंने विश्लेषण किया। मुझे महसूस हुआ कि संसार के लोगों की दृष्टि बिगड़ते देर नहीं लगती इसलिए हमारे साथ जो लोग रहते हैं, उन्हें एक ऐसी निर्भयता प्रदान करें कि फिर किसी भी हालत में उनकी दृष्टि में परिवर्तन नहीं आए। इसलिए मैंने कह दिया कि, 'कभी भी, आपमें से कोई भी, मेरा कोई कार्य मत करना। अर्थात् आपके मन में मेरा डर नहीं होना चाहिए कि यह कुछ लेने आये होंगे।' तब पूछा, 'ऐसा क्यों?' मैंने उत्तर दिया कि, 'मैं दो हाथवालों के पास से कुछ माँगने के हक में नहीं हूँ। क्योंकि दो हाथवाले खुद ही दुःखी हैं और वे सुख खोज रहे हैं। मैं उनसे कोई आशा नहीं रखता हूँ लेकिन आप मुझसे आशा रखना क्योंकि आप तो खोज रहे हो और आपको अनुमति है। मुझसे आपका कार्य बिना झिझक करवा लेना, लेकिन मेरा कोई कार्य मत करना।' ऐसा कह दिया और निर्भय बना दिया। इस पर उन लोंगो ने क्या कहा कि 'सुपर ह्युमन के अलावा और कोई भी ऐसा नहीं कह सकता।' अर्थात् उन्होंने क्या कहा, कि यह सुपर ह्यूमन का स्वभाव है, ह्यूमन का नेचर नहीं है!

इतना ध्यान रखना है कि लालच न घुस जाए

प्रश्नकर्ता : 1968 में आपको सिमेन्ट के फ्लोर पर सिर्फ दरी पर सोते हुए देखा था। तब नटु भाई ने सजेस्ट किया कि, 'दादा दरी पर ब्लैन्केट डालकर सोया करें।' तो दादा को मेरी बात पसंद आई। इसलिए घर से इम्पोर्टेड ब्लैन्केट ले गया और दादा को दिया। उन्हें पसंद आया और तुरंत ही अंटी में से 100 रूपया का नोट निकालकर दिया। तो मैंने कहा, 'दादा, इसके कहीं पैसे लिए जाते होंगे!' तब दादा ने कहा कि 'अगर

पैसे नहीं लेने हो तो ब्लैन्केट वापस ले जाओ। हम किसी की भी चीज़ को यों ही मुफ्त में नहीं ले सकते।'

दादाश्री : अंदर लालच तो कभी भी होना ही नहीं चाहिए, ऐसा बनना पड़ेगा। अंदर से ज्ञान में पक्का रहना चाहिए कि लालच तो किसी भी प्रकार का नहीं होना चाहिए।

व्यापार और व्यवहार में लक्ष्मी की प्योरिटी

यह जो कपड़े पहने हैं न, ये जब कोन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करता था न, उसके नफे में से बने हैं सारे। किसी का एक पैसा भी नहीं लेना है। जो कोन्ट्रैक्ट का व्यवसाय किया था उसका जो कुछ है, वह जो स्टॉक है, यह सब उसी में से खर्च किए हैं। मैं इसमें हाथ ही नहीं डालता। वर्ना अगर मैं लोगों का खाऊँ, मैं लोगों से पैसे लूँ और लोगों के दिए कपड़े पहनूँ और लोगों की गाड़ियों में घूमूँ तब तो फिर शायद ज्ञान कच्चा पड़ जाएगा। मुझे तो कुछ चाहिए ही नहीं। जब यह शरीर ही मेरा नहीं है तो मैं रखूँ कहाँ?

व्यापर में धर्म होना चाहिए लेकिन धर्म में व्यापर नहीं होना चाहिए। पैसे वगैरह नहीं होने चाहिए। यह कोई ड्रामा नहीं है कि इसकी टिकट के पैसे लें। हाँ, कितने ही लोग होते हैं उन्हें मेन्टेनन्स (भरण-पोषण) के लिए ज़रूरत होती है, तो हमें उन्हें देने में हर्ज नहीं है।

कोई मुझे कुछ चीज़ देने लगे न तो मैं लेने के लिए फालतू नहीं हूँ क्योंकि मैं याचक भी नहीं हूँ। मुझमें भिखारीपन नहीं है। अगर मुझे किसी भी चीज़ की भीख रहे तो भिखारीपन कहलाएगा न? ऐसा इगोइज़म भी नहीं है कि मुझमें भिखारीपन नहीं है और ये सभी भिखारी हैं। नहीं, ऐसा भी नहीं है। लेकिन क्यों लें? ये सब तो सुख ढूँढ रहे हैं, जबकि मेरा जो सुख है, वह पूरे ब्रह्मांड का अलौकिक सुख है। कभी भी कम ही नहीं होता बल्कि इतना छलकता है कि साथ में बैठनेवाला भी सुखी हो जाता है। इतना सुख छलकता रहता है।

क्या कारण है कि हमारा मन प्योर हैं, क्योंकि 28 साल से मैं इस देह का मालिक नहीं रहा।

संसार की तलवारों के बीच प्योर वीतरागता

काम-धंधा करते हैं, 'इन्कम टैक्स-सेल्स टैक्स' सभी भरते हैं, संसार की सेंकड़ों तलवारों के नीचे भी वीतरागता में रहते हैं। कोई हाथ काट डाले, तब भी वीतरागता रहे।

यह (अक्रमज्ञान) पूर्णत: प्रकट हो चुका है। संपूर्ण वीतरागता में रहकर, संसार की सभी क्रियाएँ कर सकें और आत्मा की सभी क्रियाएँ कर सकें, दोनों अपनी-अपनी क्रिया में रह पाएँ, ऐसा है यह अक्रम विज्ञान!

देखो न, क्या हमें किसी के साथ मतभेद या कोई झंझट है? सामनेवाला उल्टा बोले, तब भी कोई झंझट है? उनके साथ कैसे 'डीलिंग' करना है हमें यह आता है! वीतराग रहना और 'डीलिंग' करना, दोनों साथ-साथ रखना हैं। 'डीलिंग' *पुद्गल* (जो पुरण-गलन करता है) करता है और हमें वीतराग रहना है। अत: यदि समझे तो इस काल में वीतरागता देखने को मिली है! गहरे उतरें न, तो 'प्योर' वीतरागता देखने को मिलेगी।

प्योर के सानिध्य में हुआ जा सके प्योर

मुझमें जो वीतरागता है, वह अगर आप एक बार देख लो न, तो फिर आपसे भी हो पाएगा। क्योंकि मैं करके दिखाता हूँ, इसलिए आपको एडजस्ट हो जाता है। यानी अगर मैं प्योर हूँ तभी लोग प्योर हो सकेंगे! अत: कम्पलीट प्योरिटी होनी चाहिए।

बाकी, वीतराग अर्थात् बहुत सयाने लोग। मोक्ष का सरल से सरल, आसान से आसान मार्ग, वीतराग पुरुष देकर गए हैं, अन्य सभी लोगों ने मोक्ष का मार्ग उलझा-उलझाकर भूल-भुलैया के रूप में बताया है। वह कैसी भूल-भुलैया? कि एक बार अंदर घुसा तो फिर निकल नहीं पाता, उसमें से निकला जा सके, ऐसा है नहीं। वीतराग के मार्ग में इतनी सी भी पोल नहीं रखी, क्योंकि वीतराग तो बहुत ही शुद्ध थे। वीतराग ऐसे थे कि जिन्हें कुछ भी नहीं चाहिए था, प्रपंच नहीं था, जिन में राग नहीं था, जिन्हें किसी भी प्रकार की इच्छा ही नहीं थी!

घर-संसार में हीरा बा व दादा की प्योरिटी

एक व्यक्ति ने हीरा बा से पूछा, 'दादा का स्वभाव बहुत अच्छा है! क्या पहले से ही ऐसा था?' तब उन्होंने कहा कि, 'पहले तो तीखे भँवरे जैसे थे। ऐसे तो अभी हुए हैं।' उन्होंने जो देखा था, वह वे भूल नहीं सकती थीं न! हम फिल्म बदलते रहते हैं और पिछली फिल्म को याद नहीं करते जबकि वे तो पिछली फिल्म भी दिखाती हैं। हम तो वही फिल्म दिखाते हैं जो फिल्म चल रही है।

फिर भी उन्हें दु:ख हो ऐसा नहीं करना है। क्योंकि ज़रा सा कुछ भी हो जाए तो उन्हें दु:ख हो जाता है, क्योंकि बहुत प्योरिटी है न। सहज भाव से जो आए वह कह देती हैं न! उन्हें कोई दखल ही नहीं है या न ही किसी की शरम वगैरह रखती हैं।

एक डॉक्टर बेचारा हीरा बा के लिए ऑनररी (सेवाभाव से) काम करता था तब भी उनसे कहने लगीं कि 'यह तो तीखा आग जैसा है।' मैंने कहा, 'ऐसा नहीं कहना चाहिए हमें।' उन्होंने तो सहज भाव से कहा था, तो डॉक्टर हँसने लगा। ऐसी सहजता से बोलीं थी इसलिए उसे बुरा नहीं लगा, अंदर कोई पाप नहीं, पूर्ण प्योरिटी।

हीरा बा साफ-साफ कह देती हैं। 'मेरी और तेरी नहीं जमेगी,' ऐसा भी कह देती हैं। स्वार्थ की नहीं पड़ी है न, कि ये मेरी सेवा करते हैं। ऐसा-वैसा कुछ भी नहीं। मेरे साथ भी साफ-साफ बात करती हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या उन पर बहुत रोब जमाया था?

दादाश्री : रोब तो जमाया था न। रोब के बिना तो ऐसा है न, यह तो स्त्री जाति है। रोब तो रखना ही पड़ता है और *लागणी* (भावुकतावाला प्रेम) भी रखनी पड़ती है। दोनों साथ में रखने पड़ते हैं। इसके बावजूद भी वे तो हमें यही कहती हैं कि, 'बहुत सख्त स्वभाव के, तीखे भँवरे जैसे हो।' अब वे ऐसा कभी भी नहीं समझ सकेंगी कि इनमें (दादा में) यह तीखापन नहीं है। बाहर से दिखावा रखा था। दबी हुई पोटली खोलकर दिखाएँगे तब न! थोड़े से वज़न की ज़रूरत है। बाकी मैं तो बहुत सख्त, उससे ताप लगता रहता है। गरम नहीं होता, ताप यों ही लगता रहता है। अगर सख्त नहीं रहेंगे तो चलेगा कैसे? क्योंकि हममें प्रताप और सौम्यता दोनों ही हैं।

बाकी 40 साल से हमने किसी से तेज़ आवाज़ में बात नहीं की है। किसी के सामने आवाज़ तेज़ नहीं की है, यह तो सभी लोग जानते हैं। कहते भी हैं कि 'ये तो भगवान जैसे हैं।' अत: एक आँख में रोब और एक आँख में फ्रेन्डशीप रखनी है।

स्वामित्व सौंप दिया हीरा बा को, कल्याण की खातिर

मुझे अब 76वाँ साल लगेगा, यह धूमधाम से मनाएँगे और घर में हीरा बा भी हैं, वे मुझसे 3 साल छोटी हैं, 73 साल की हैं। हम दो लोग हैं, पूरा स्वामित्व उन्हीं का है, मेरा स्वामित्व नहीं

है। घर-बार वगैरह सब उनका, जो कुछ भी जायदाद है वह सारी उनकी। फिर मैं कहाँ पेटी रखूँ? वे रखने दें तो रख लेता हूँ। और मैंने तो 4 सालों से, पेटी भी नहीं देखी है कि अंदर क्या कपड़े हैं! वह भी उनका स्वामित्व है।

क्योंकि मेरे पास देह का स्वामित्व भी नहीं है तो फिर और क्या! स्वामित्व छूट जाए तो कल्याण हो जाएगा! अत: यों साफ-सुथरा बहीखाता है हमारा।

संघ में भी बोए प्योरिटी के बीज

यह संघ इतना साफ है कि मैं तो मेरे घर के; खुद के कपड़े व धोती पहनता हूँ। मेरी अपनी कमाई से। इसलिए ऐसे घुम सकता हूँ। अगर संघ का पहनता तो धोती तो 400-400 की भी मिलती हैं न? लेकिन नहीं, घर के कपड़े पहनना, प्लेन में आना-जाना वगैरह भी खुद का। यहाँ से बड़ौदा आना-जाना वगैरह सब खुद के खर्च से, सब अपने पैसों से। सिर्फ जब अमरीका जाते हैं, तब वे लोग देते हैं, उतना किराया लेते हैं। बाकी, रुमाल तक नहीं। अर्थात् इस संघ के चार आने भी नहीं लेने हैं।

तकलीफवाला लेने आता है। जबकि मुझे तो व्यवहार में तकलीफ नहीं है और भीतर तो अपार सुख बरतता है! पैसा किसलिए चाहिए? यह संघ पैसा सिर्फ इसलिए लेता है कि ये पुस्तकें छापकर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : अगर पैसा लेंगे तो किसी को आपका ज्ञान परिणमित ही नहीं होगा!

दादाश्री : परिणमित ही नहीं होगा। हम जानते हैं कि पैसा या फीस ली तो फिर रहा क्या? नाटक ही हो गया! जिसके लिए फीस ली, या टिकट ली वह तो नाटक ही है, सिनेमा ही है और यह तो भगवान के घर के अंतिम स्टेशन की बात है।

पूरा संघ है, 'दादा भगवान' का बड़ा ट्रस्ट चल रहा है लेकिन उसका एक भी पैसे का उपयोग निजी काम के लिए नहीं होता, एक पैसा भी नहीं। संघपति वगैरह किसी के लिए भी उपयोग नहीं होता। जबकि वे 12 महिने में लाख रुपए देते हैं वह अलग और ऊपर से खुद हिसाब भी रखते हैं। संघ के चार आने भी खुद के लिए खर्च नहीं करते। सबकुछ खुद के पैसों से, तभी इतना साफ रह सकता है न! ऐसा स्वच्छ (प्योर) संघ तो वर्ल्ड का आश्चर्य कहा जाएगा!

प्रश्नकर्ता : सभी लोग अपना खर्च खुद चलाते हैं फिर भी इतना सारा काम हो रहा है!

दादाश्री : बल्कि ज़्यादा काम कर रहे हैं। खुद का खर्च करके ज़्यादा काम कर रहे हैं।

जहाँ दाग़ नहीं, वहीं पर शुद्ध वाणी

अमरीका में एक व्यक्ति ने मुझ से कहा, 'हमारी वह मर्सीडीस गाड़ी भारत ले जाइए। अंदर धूल नहीं आएगी।

'मेरा तो इस पेटी को रखने का ठिकाना नहीं है और अगर यह गाड़ी ले जाऊँ तो रखूँ कहाँ पर? मेरे पास न तो कोई प्लॉट है और न ही कोई जगह। तो फिर इस गाड़ी को रखूँ कहाँ? मैंने कहा, 'भाई, मुझे गाड़ी नहीं चाहिए। ये झंझट मोल नहीं लेना। यह काम मेरा नहीं है। जिसकी गाड़ी चालू होगी, हम उसी में बैठ जाएँगे। यह परेशानी क्यों मोल लूँ? मैं मुक्त पुरुष, वापस इस बंधन में क्यों पड़ूँ।'

'(मैं क्यों बंधन में आऊँ भाई) आपके यहाँ तो बाँधने के साधन हैं। मैं क्यों लफड़ा बढ़ाऊँ? मेरे जो लफड़े थे वे भी मैंने निकाल

दिए हैं। ऐसे लफड़े मैं क्यों बढ़ाऊँ?' अत: कह दिया कि, 'मुझे नहीं चाहिए।' जब मुंबई पहुँचें तब हमें लेने 50-100 गाड़ियाँ एयरपॉर्ट पर आ जाती हैं। जिसकी गाड़ी मुझे ठीक लगे उसमें बैठ जाता हूँ। मुझे इन लफड़ों से क्या लेना-देना? और मुझे गाड़ी की ज़रूरत भी नहीं है। मैं किराए की गाड़ी में आता हूँ वर्ना मैं तो ऐसा हूँ कि अभी भी बस में भी आ जाऊँ। उम्र हो गई है इसीलिए नहीं हो पाता लेकिन हमें जिन साधनों की ज़रूरत हो वे सब मिल जाते हैं।

गाड़ी रखूँ तो फिर मैं उसके स्पेर पार्ट्स लेने कहाँ जाऊँ? और मेरा आत्मा उसी में रहेगा। मुझे क्या करना है गाड़ी का? पूरे ब्रह्मांड की गाड़ियाँ अभी मेरे पास हैं। भगवान जिनके वश में हो चुके हैं, 'दादा भगवान' जिनके वश में हो चुके हैं उन्हें और क्या चाहिए? जब तक सोना-चांदी चाहिए तब तक भीख है वह भिखारी कहलाता है।

कोई व्यक्ति ऐसा हिसाब नहीं ढूँढ सकता कि दादा ने किसी जगह से एक पैसा भी लिया हो। और वापस सब लोग मिलकर 50 हज़ार की गाड़ी लेने का कह रहे थे। लोग तो ऐसा कहेंगे न कि 'दादा ने ली।' मुझे ऐसा नहीं चाहिए। दाग़ पड़े ऐसा चाहिए ही नहीं न! और जब तक दाग़ नहीं पड़ेगा, तभी तक यह वाणी फर्स्ट क्लास निकलेगी। मैं अपनी कमाई का खाकर बोला हूँ। ऐसी शुद्ध वाणी है न, ये सभी बातें उसी वजह से है।

प्योरिटी में माना सच्चा सुख

जितना मुझे चाहिए लोग उतना पैसा देंगे। लेकिन मुझे पैसों का क्या करना है? क्योंकि वह सारी भीख जाने के बाद ही तो मुझे यह ज्ञानी का पद मिला है!

मुझे अमरीका में गुरुपूर्णिमा के दिन सोने की चैन पहना जाते थे। 2-2, 3-3 तोले की! लेकिन मैं सभी को वापस दे देता था क्योंकि मुझे क्या करना है? तब एक महिला रोने लगीं कि 'मेरी माला तो लेनी ही पड़ेगी।' तब मैंने उसे कहा, 'अगर मैं तुझे एक माला पहनाऊँ तो तू पहनेंगी?' तो उस बहन ने कहा, 'मुझे कोई हर्ज नहीं लेकिन मैं आपसे नहीं ले सकती।' तब मैंने कहा, 'मैं तुझे दूसरे से पहनवाऊँगा।' एक मन (20 किलो) सोने की माला बनवाएँ, और फिर ऐसी शर्त रखें कि रात को पहनकर सो जाना पड़ेगा, तो पहनकर सो जाओगी क्या? दूसरे दिन कहेगी, 'लीजिए दादा, यह आपका सोना।' सोने में सुख होता तो अधिक सोना मिलने पर आनंद होता लेकिन यह तेरी मान्यता है कि इसमें सुख है, रोंग बिलीफ है। इसमें सुख होता होगा? सुख तो, जब इस वर्ल्ड की कोई चीज़ ग्रहण नहीं करनी हो, तब सुख होता है।

मैं तो अगर लोगों से एक पैसा भी लूँ, तो फिर मेरे शब्द लोगों को स्वीकार ही कैसे होंगे? क्योंकि मैंने उसके घर की जूठन खाई। हमें कुछ भी नहीं चाहिए। जिसे किसी भी प्रकार की भीख ही नहीं है उसे भगवान भी क्या दे सकते हैं?

एक व्यक्ति मुझे धोती देने आया, दूसरा कोई कुछ और देने आया, मेरी इच्छा होती तो और बात थी, लेकिन मेरे मन में किसी प्रकार की इच्छा ही नहीं! अगर फटा हुआ होगा तो भी चलेगा मुझे। अत: मेरे कहने का मतलब यह है कि जितना साफ रखोगे उतना इस जगत् को लाभदायक हो जाएँगे!

सत्संग करने में भी लक्ष्मी की प्योरिटी

मैं तो सत्संग में खर्च करता हूँ। मैं तो मुंबई में रहा हुआ हूँ न, जबकि सत्संग सांताक्रुज़

में होता था। हमारी गाड़ी थी लेकिन वह काम पर गई होती थी और सांताक्रुज़ से रोज़ किराए की गाड़ी में आता था लेकिन किराया खुद का। घर के पैसों के किराए से रोज़ यह सत्संग किया है। रोज़ 10-15 रुपया किराया होता है। और कितनी ही बार तो यात्रा का आयोजन हुआ है वह भी हमारे घर के पैसों से, लोगों को फ्री ऑफ कॉस्ट (मुफ्त) क्योंकि ऐसा भाव है कि किसी भी प्रकार से लोगों का कल्याण हो। इतने पैसे तो अच्छी तरह से खर्च हुए।

हम तो आए हैं औरों के सुख व आनंद के लिए

लॉस एन्जेलस (अमरीका) में हमें 2-3 लोग कह रहे थे कि 'इन्डिया से बिना फीस का सत्संग करने आनेवाले आप अकेले ही हैं।' मैंने कहा 'भाई हमें फीस लेने की ज़रूरत नहीं हैं और हम आपके लिए आए हैं। आप लोगों को कैसे शांति व आनंद हो, उसी के लिए आए हैं। हम आपको लूटने नहीं आए हैं।

लोग तो पहले सिल्वर जुबली (रजत जयंती) मनाते हैं। हमारी तो सिल्वर जुबली भी नहीं मनाई गई। फिर गोल्डन जुबली मनाते हैं, वह भी किसी ने नहीं मनाई। अब यह डाइमन्ड जुबली मनाने को तैयार हुए हैं। पूरी थैली भरकर इकट्ठा किया था, तो मैंने मना कर दिया। मैंने कहा, 'थैली लेकर मैं क्या करूँगा? बेहतर है इसका बोझा ही मत रखो।' 'आपको 75 हज़ार की थैली, 75 साल हुए हैं इसलिए।' मैंने कहा, 'मुझे इसका क्या करना है?' एक तो यों 25-30 हज़ार का खर्च हो जाता है और फिर 75 हज़ार! भारी पड़ जाएगा इस देश में तो? ये जुबलियाँ मनाकर फिर भी अर्थी में ही जाते हैं! तो छोड़ न भाई! क्या करना है? मुझे इस दुनिया में कोई भी चीज़ नहीं चाहिए। मुझे किसी भी चीज़ की ज़रूरत ही नहीं है, इच्छा ही नहीं है।

कल्याण की कैसी अद्‌भुत भावना!

हमें तो पैसों की ज़रूरत ही नहीं हैं। हाँ, एक मंदिर बन रहा है जो कि जगत् कल्याण के लिए बनवाना है, उसके लिए जिसे जो देना हो वह दे। यह मंदिर श्री कृष्ण भगवान का है, अंबा जी भी हैं, इस तरफ शिव जी हैं, फिर गणपति जी हैं, सीमंधर स्वामी हैं, महावीर स्वामी हैं। बहुत बड़ा मंदिर बन रहा है। अत: वहाँ पर जिन्हें देना हो, वे दें। यह लोगों के कल्याण के लिए है। मैंने कहा है कि 'ये मूर्तियाँ मुस्कुराने लगेंगी।' उनमें प्रतिष्ठा करूँगा तो मूर्तियाँ बातें करेंगी।

अपनी पूँजी खर्च करो भगवान के कामों में

अत: अमरीका में एक व्यक्ति बोल उठा, 'मुझे तो 2 हज़ार डॉलर देने हैं, मंदिर के लिए,' तब दूसरे ने कहा, 'मुझे भी 2 हज़ार डॉलर देने हैं।' तो 15 मिनट में तो कितने हो गए?

प्रश्नकर्ता : 90 हज़ार, अर्थात् 9 हज़ार डॉलर।

दादाश्री : 9 हज़ार डॉलर, 90 हज़ार रुपए इकट्ठे हो गए 15 मिनट में। एक व्यक्ति का दारू और मांस छूट गया तो उसने भी 2 हज़ार रुपए लिखवाए थे। मैंने कहा, 'अरे, भाई तेरे पास हैं नहीं तो क्यों लिखवा रहा है?' तो कहने लगा, 'नहीं दादा, लिखवाऊँगा तो मेरे पास इकट्ठे हो जाएँगे! नहीं तो नहीं होंगे।' 'वर्ना मेरा हाथ तो खुला है, खर्च हो जाएँगे,' कहने लगा। रोज़ के 50 डॉलर खर्च करके गाड़ी लेकर हमारे साथ घूमता रहता था।

मुझ पर पैसों की बरसात करने के बजाय मंदिर पर डालो। आपका हित है। बाकी, यह मंदिर मेरा नहीं है। इतना सहयोग दोगे तो बस!

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी का मंदिर इसलिए

बनवा रहे हैं ताकि सभी इस तरह से आगे बढ़ सकें?

दादाश्री : जो कोई सीमंधर स्वामी का नाम लेगा न, तभी से उसमें बदलाव होने लगेगा।

ज्ञानी को कुछ भी नहीं चाहिए

कितने लोग यहाँ आकर पैसे रखते हैं। अरे, यहाँ पर पैसे नहीं रखने हैं। जहाँ ब्रह्मांड का मालिक बैठा हुआ है, क्या वहाँ पर रखना चाहिए? आपको तो माँगना है कि मुझे ऐसी परेशानी है, तो वह हटा दीजिए। पैसे तो किसी गुरु के सामने रखना। उन्हें कपड़े वगैरह की ज़रूरत हो सकती है, अन्य किसी चीज़ की ज़रूरत हो सकती है। ज्ञानीपुरुष को तो कुछ भी नहीं चाहिए होता! अगर लेंगे न, पैसे लेंगे तो (हमारे मुँह से) सही बात निकलेगी ही नहीं। अंदर चोरी रहेगी ही।

साफ होकर आओ, मैला मत करना। एक रुपया भी नहीं ले सकते। लोग पहले से ही दु:खी हैं और उन्हीं से रुपए ले रहे हो? क्या ये लोग सुखी हैं? दु:ख दूर करने के लिए वहाँ पर जाते हैं न? बल्कि आप, उनसे 25 रुपए लेकर उनका दु:ख और बढ़ाते हो। किसी से एक पैसा भी नहीं लेना चाहिए। यह तो सभी ने ज़बरदस्ती घुसा दिया है, यों ही।

ज्ञानी सिखाते हैं व्यवहार

प्रश्नकर्ता : नासमझी से यह सब चला है। इसके परिणाम तो आएँगे ही न?

दादाश्री : उसी वजह से मार पड़ रही है न! इसलिए कहता हूँ न, 'अरे भाई, आकर समझ लो मुझसे। आत्मा नहीं मिल रहा है तो व्यवहार समझकर जाओ, तो व्यवहार में समझदार बन जाओगे।' एक ग्रेज्यूएट लड़के ने मुझसे कहा कि 'मेरे भाई इतने कपड़े पहनते हैं कि बार-बार कमीज़ वगैरह सिलवाते हैं और मैं किफायत करता रहता हूँ।' तब मैंने कहा कि 'अब तुझे क्या करना है?' तब कहने लगा, 'मैं भी ज़्यादा पहनूँगा, ज़्यादा सिलवाऊँगा। अगर वह सिलवा रहा है तो मैं क्यों कमी रखूँ।' फिर मैंने उससे कहा, 'ये जो कमीज़ हैं न, कपड़े हैं न वे सारा हिसाब है पूरी ज़िंदगी का। आज अगर तू उनका ज़्यादा उपयोग करेगा, तो आगे जाकर कमी पड़ेगी। इसलिए तू ज़रूरत के अनुसार काम में लेना। 'इसकी वजह से मैं भी बिगाड़ूँ,' ऐसा मत करना।' अत: वह समझ गया कि बिगाड़ना नहीं है। उसके बाद नहीं बिगाड़ता था।

इसलिए अगर इतना समझ लें न, तो अक्लमंद हो जाएँ। तू तेरा ही बिगाड़ रहा है और बहुत ज़्यादा बचा-बचाकर मत रखना। जितना काम में आए उतना काम में लेना। मैं तुझसे ऐसा नहीं कहता हूँ कि यहाँ से ऐसे खुले या फटे हुए कपड़े पहनना।

ब्रह्मचारियों के लिए खटपट, दादा की

मैं किसी से कोई चीज़ माँगकर नहीं लेता हूँ, फिर भी इन सब लोगों ने देखा कि आज मैंने माँग लिया। कभी कोई चीज़ नहीं माँगता हूँ। देने आए तब भी मैं कहता हूँ कि 'कहाँ रखूँ? मेरी पेटी में समाता नहीं है, उसमें जगह नहीं है। इसलिए उसे मैं कहाँ रखूँ' इसलिए लेता नहीं हूँ, फिर भी आज मैंने माँग लिया। चंदूभाई ने यह सब देखा न!

प्रश्नकर्ता : क्या माँगकर लिया है?

दादाश्री : किसी एक व्यक्ति ने कहा कि 'हमारे यहाँ अपने चरण रखें और कारखाने में ज़रा विधि करवानी है।' जब मैं वहाँ गया तो वह कारखाना तो हैन्डलूम का निकला, अरे!

पावरलूम का। इसलिए फिर जब कपड़ा देखा तो मुझे ऐसा लगा कि भविष्य में हमें इसकी ज़रूरत पड़ेगी। जब मंदिर बनवाएँगे और ब्रह्मचारियों को कपड़े वगैरह की जो सप्लाय देनी पड़ेगी तब इसकी ज़रूरत पड़ेगी। इसलिए उसका भाव पूछ लिया।

भाव तो मुझे 8 रुपए कहा था लेकिन 5 रुपए में देने के लिए कहा। तब मैंने कहा, 'भाई, आप मुझे दिखाइए' तब वे पूरा थान दे रहे थे। तब मैंने कहा, 'मुझे तो 1 या 2 गज दो, सेम्पल के लिए। इतना माँग लिया लेकिन उनका तो कल्याण हो गया न! वे कहने लगा कि 'कभी भी माँगा नहीं और आपने यह माँगा।' तो मेरा ऐसा हिसाब है। मैंने इन लड़कों के लिए माँगा। भविष्य में महँगा लेकर आएँ इसके बजाय इन लोगों से कह दें कि 'भाई, आप जिस भाव से होलसेल में बेचते हो, उस भाव से मुझे दो।' और 'मुफ्त में दे दो' मैं ऐसा माँगने में नहीं मानता हूँ। उन लोगों ने कहा कि 'आपको इन लड़कों के लिए हम मुफ्त में देंगे।' मैंने कहा 'मैं इसमें नहीं मानता। आप हमें होलसेल के भाव में देंगे तभी लूँगा।' उसमें जो फायदा है उतना ही देखने की ज़रूरत है। तो उन्होंने 5 रुपए मीटर कहा। तब मैंने कहा, 'बहुत अच्छा। चलो हमें पसंद आया। लेकिन वह माँगा था।'

प्रश्नकर्ता : उसे माँगना कहा ही नहीं जाता, दादा। आपने कम भाव में लेने की बात की, उसे लेना नहीं कहते। ऐसा साधारणतया सभी करते हैं।

दादाश्री : इन लड़कों के लिए क्या चाहिए? किस तरह से कम भाव में सप्लाई हो जाए? फ्री में देंगे तो बाद में दोबारा नहीं देंगे। तो यह सारा ध्यान रखना पड़ता है न! इसकी वजह से कहीं मेरा मोक्ष नहीं चला जाएगा।

दादा प्योर, अखंड ब्रह्मचारी

हम तो, आप जो माँगोगे वे देते हैं क्योंकि हम अखंड ब्रह्मचारी हैं, जिन्हें ज्ञान होने के बाद, 28 सालों से कभी भी विषय से संबंधित विचार ही नहीं आया। 50,000 लोग हैं अपने यहाँ, लेकिन उनमें से किसी को भी ऐसी छूट नहीं है कि 'आप स्त्री को छू सकते हो,' क्योंकि उस स्पर्श का गुण बहुत ही विषम है। ऐसा नहीं है कि सभी ऐसे होते हैं लेकिन हो सके तब तक उसमें नहीं पड़ना चाहिए। हमें छूट हैं, क्योंकि हम तो किसी भी जाति में नहीं हैं। मैसक्युलिन या फीमेल या ऐसी किसी जाति में नहीं हैं। हम जाति से परे हो गए हैं।

पूर्ण निर्विषयी केवल दर्शन से

हम में तो विषय का एक भी परमाणु नहीं है। यह ज्ञान होने के बाद हमें कभी भी विषय का विचार ही नहीं आया। जिन्हें विषय का विचार तक नहीं आए, जिनका मनोबल ज़बरदस्त ज्ञानपूर्वक हो चुका हो, फिर उन्हें कोई हर्ज नहीं है। इसीलिए तो स्त्रियाँ हमारे चरणों को छूकर विधि कर सकती हैं न! अन्यों को तो स्त्री के छूने से पहले ही विषय का विचार खड़ा हो जाता है। हमें तो 'थ्री विज़न' से एक ही सेकन्ड में सब आरपार दिखाई देता हैं। हमारा दर्शन इतना उच्च है, फिर रोग उत्पन्न ही कैसे हो?

हमें *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) के प्रति राग ही नहीं है न! मेरे ही *पुद्गल* के प्रति मुझे राग नहीं है। *पुद्गल* से मैं सर्वथा जुदा ही रहता हूँ। जिसे खुद के *पुद्गल* के प्रति राग होता है, उसे दूसरों के *पुद्गल* के प्रति भी राग होता है। अनंत जन्मों से यही का यही भोगा है फिर भी नहीं छूटता। यह आश्चर्य ही है न! कितने ही जन्मों से विषय सुख का विरोधी हो

चुका हो, आवरण रहित दृष्टि से विषय सुख के बारे में बहुत ही सोचा हो, ज़बरदस्त वैराग्य उत्पन्न हो चुका हो, तब विषय छूट सकता है। वैराग्य कब उत्पन्न होता है? अंदर जैसा है वैसा ही दिखाई दे, तब।

ज्ञानी पद में निर्विकारी दशा

विषय तो हमारे स्वप्न में भी नहीं है और हमारा बिल्कुल करेक्ट (शुद्ध) होता है। आईने जैसे ट्रान्सपेरेन्ट होते हैं।

संपूर्ण चरित्र किसे कहते हैं? शील को चरित्र कहते हैं। शील यानी कि विषय का विचार तक नहीं आए। हमें विषय का एक भी विचार नहीं आता। हमारा चरित्र ही चरित्र कहलाता है। संयम परिणामी उसे कहेंगे, जिसे विषय का विचार ही नहीं आए!

मेरा तो 'ओपन टू स्काइ' जैसा है। एक बाल जितनी चीज़ भी गुप्त नहीं रखी है। ज्ञान होने के बाद मैंने अब्रह्मचर्य का कभी मन से भी सेवन नहीं किया है।

स्त्रियों को देखकर मुझ में विषय उत्पन्न नहीं होता, क्योंकि मुझे आत्मा ही दिखाई देता है। निर्विचार दशा, निरीच्छक दशा, निर्विकारी दशा! निर्विकल्प दशा, यह तो जगत् का कल्याण कर देगा!

'ज्ञानीपुरुष' को कितना सुंदर दिखाई देता होगा! सभी जगह शुद्धात्मा ही दिखाई देते हैं। हम 9वें गुणस्थानक में से जब 10वें गुणस्थानक में पहुँचे, तब से अरे! अपार सुख का अनुभव किया! उस सुख का एक छींटा भी यदि बाहर गिरे और मनुष्य उसे चखे तो साल भर के लिए परम सुखी हो जाएगा! इस विषय के कारण ही सभी प्रकार की रुकावटें है न। यही महारोग है!

प्योरिटी की वजह से आसानी से आलोचना करते हैं

प्रश्नकर्ता : कल सत्संग में आपके पास 3 व्यक्तिगत केस आए थे। अब, उन्होंने निर्भयतापूर्वक कबूल किया, सामान्यरूप से कोई व्यक्ति किसी भी जगह पर इस तरह कबूल नहीं करता लेकिन आपके समक्ष उन्होंने कबूल किया तो वह किस आधार पर किया? उन्होंने यहाँ पर क्या देखा?

दादाश्री : उन्होंने हमारी प्योरिटी देख ली है, वीतरागता देख ली है हमारी। प्योरिटी से यह सब समझ जाता है। चाहे कैसा भी कपटी हो फिर भी वह प्योर होने लगता है।

प्रश्नकर्ता : तो दादा, चाहे कैसा भी व्यक्ति हो फिर भी ज्ञानीपुरुष की प्योरिटी उस पर असर डालती हैं?

दादाश्री : प्योरिटी से ही सब काम होता है। प्योर और इम्प्योर में बस इतना ही फर्क है, और कोई फर्क नहीं है। ज्ञानी और अज्ञानी में फर्क क्या है? तो वह यह है कि यह प्योर है और वह इम्प्योर है। जितना प्योर उतना ही पूरा जगत् उनके वश हो जाता है। जितनी प्योरिटी कम उतना ही कम वश में होता है। जिन्हें सभी कुछ वश हो चुका होता है, वहाँ लोग सबकुछ कबूल करते हैं। हमें सभी स्त्रियाँ, वे जब 12-14 साल की थी तब से लेकर 40 साल तक की हुई तब तक का सबकुछ एक्ज़ेक्ट लिखकर दे जाती हैं, जैसा है वैसा। उनका आत्मा ही जानता है या फिर मैं जानता हूँ, बस। उनका पति भी कुछ नहीं जानता है। चिट्ठी लिखकर लाते हैं सभी। वे चिट्ठियाँ वापस दे देता हूँ कि 'एक महीने तक पढ़ना और प्रतिक्रमण करते रहना।' उनमें से एक भी शब्द अगर मैं किसी से कहूँ तो वह स्त्री आत्महत्या कर ले। हमें इस ज्ञान से, (कागज़

की प्रिन्ट) तुरंत ही मिट जाता है। अपने आप ही मिट जाता है। चाहे कैसा भी बुरा हो फिर भी मिट जाता है। हमारा हेतु वैसा होता ही नहीं न, हिंसक हेतु नहीं होता हमारा।

वचनबल के पीछे काम करती है प्योरिटी

इन मन-वचन-काया में इतनी प्योरिटी है कि वर्ल्ड में ऐसी प्योरिटी का होना बहुत ही बड़ा आश्चर्य है! इतनी अधिक प्योरिटी है! 100 प्रतिशत प्योरिटी है। पारदर्शक है इसीलिए किसी को यहाँ कोई भी निश्चय करना हो, त्याग करना हो तो तुरंत ही उसका फल मिलना शुरू हो जाता है। अब अगर मैं बीड़ी पीता हूँ और आपसे कहूँ कि 'बीड़ी छोड़ दो,' तो क्या होगा? मेरा वचनबल कैसे काम करेगा? वचनबल के लिए तो प्योरिटी की ज़रूरत है। अपना तो यह पूरा सत्संग शुद्ध (साफ-सुथरा) है। ज्ञानीपुरुष खुद शुद्ध, तो सारा सत्संग भी शुद्ध। इस सत्संग में दो घंटे बैठने के बाद पता चलता है। वातावरण शुद्ध! कितना सुंदर वातावरण! यह वातावरण तो ग़ज़ब का वातावरण कहा जाता है! दुनिया ने देखा ही नहीं ऐसा वातावरण!

यह है, 11वाँ वन्डर ऑफ द वर्ल्ड (जगत् का 11वाँ आश्चर्य)! उसका तो फिर मेरे जाने के बाद में पता चलेगा। सभी बुद्धिवादी खोज करेंगे। बाकी, जो लाभ लेनेवाले हैं वे सब लाभ लेकर चले जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : दादा की कृपा से जो व्रत लिया है, वह भी बहुत सहजभाव से, आसानी से परिपूर्ण हो रहा है।

दादाश्री : 'व्रत' कई लोगों का काम कर देता है। इन दादा का एक-एक अंग शुद्ध है, फ्रेश है, ब्यूटीफुल है और शुद्ध न हो ऐसा तो हो ही नहीं सकता। बस इतनी ही कमी है कि खटपट है।

प्रश्नकर्ता : हमारे लिए वह खटपट उपकारी है, दादा।

दादाश्री : वह भी आपके लिए। मेरे लिए यह कमी है लेकिन यह इच्छा सहित है, 'हमने जो सुख पाया है वह सुख पूरा जगत् पाए।'

प्रश्नकर्ता : वह इच्छा है लेकिन अगर दादा की खटपट नहीं होती तो इतना कल्याण नहीं हो पाता।

दादाश्री : हो ही नहीं सकता था न! किस तरह से होता! मैं अपने ही स्वार्थ में पड़ा रहता न! खटपट अर्थात् दूसरों का हित देखना, उससे तीर्थंकर नामकर्म का बंधन होता है। औरों का देखना, खुद का कुछ नहीं देखना है।

महा सिद्धिवान परम पद पर

अभी मुझे अगर करोड़-दो करोड़ रुपये इकट्ठे करने हों तो हो सकते हैं क्या? मेरे बोलते ही हो जाएँ। लोग तो पूरी जायदाद देने के लिए तैयार हैं, इसका क्या कारण है? सिद्धि है मेरे पास। अगर उसको मैं भुनाऊँ तो मेरे पास रहा क्या फिर? कितने प्रयोग करके यह सिद्धि प्राप्त होती है और मुझे पैसों की ज़रूरत नहीं है लेकिन मेरी जो दूसरी सिद्धियाँ हैं, आंतरिक सिद्धियाँ हैं, वे तो ज़बरदस्त सिद्धियाँ हैं। भगवान महावीर ने अपनी सिद्धियों को नहीं भुनाया था। भगवान कच्चे नहीं पड़े, और मैं भी उनका शिष्य हूँ। बहुत पक्का शिष्य हूँ। बहुत पक्का शिष्य, असली! और वह भी इतना पक्का कि पूरा जगत् भी अगर विरुद्ध हो जाए तो भी नहीं डरूँ, ऐसा पक्का हूँ। फिर इससे अधिक और क्या प्रमाण चाहिए? सिद्धि का दुरुपयोग नहीं करता, इसलिए न! और यदि सिद्धि का दुरुपयोग करें तो? कल चार आने के रह जाएँगे 'दादा'!

फिर लोग कहेंगे 'जाने दो न, दादा ने तो

गुप्त रूप से लेना शुरू कर दिया है!' लेकिन मैं 'गारन्टी' से कहता हूँ कि यहाँ 'सीक्रेसी' (गुप्तता) जैसी चीज़ है ही नहीं। 24 घंटे, चाहे जब भी तुझे देखना हो आ जाना। यहाँ 'सीक्रेसी' है ही नहीं! और जहाँ 'सीक्रेसी' नहीं है वहाँ कुछ है ही नहीं। यहाँ तो कोई भी जिस समय चाहे, 'एट एनी टाइम' प्रवेश कर सकता है, रात को 12 बजे, 1 बजे! कोई 'सीक्रेसी' ही नहीं है तो, फिर क्या? जैसे 'सीक्रेसी' नहीं वैसे ही कोई 'डिप्रेशन' भी नहीं देखा जा सकता। एकमिनट भी दादा 'डिप्रेशन' में नहीं आ सकते। 'एलिवेशन' में तो रहते ही नहीं लेकिन 'डिप्रेशन' भी नहीं होता! वे परमानंद में ही रहते हैं!

ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि 'ज्ञानीपुरुष' में अनंत प्रकार की सिद्धियाँ होती हैं। उनमें तो ग़ज़ब की सिद्धियाँ होती हैं। क्योंकि जिन्हें कोई अपेक्षा नहीं हो, उनमें बहुत प्रकार की सिद्धियाँ होती हैं।

यदि मुझे इन सिद्धियों का उपयोग करना हो तो समय लगेगा क्या? क्यों समय लगेगा? जो माँगूँ वह मिलेगा, लेकिन मैं भिखारी नहीं हूँ। किसी भी प्रकार की भीख नहीं हो तभी यह पद प्राप्त होता है!

मेरापन मिटते ही बात समझ में आ जाती है

प्रश्नकर्ता : महावीर भगवान ने जो बताया था, आप भी वही बताते हैं, वह सब तो हम पहले पढ़ते थे, सुनते थे लेकिन कुछ समझ में नहीं आता था। और यह तो सीधा अंदर उतर जाता है।

दादाश्री : लेकिन उतर ही जाएगा न। सीधा उतर ही जाएगा! इसमें शुद्ध दे रहा हूँ न! इसमें अगर ज़रा सा भी 'मेरापन' रखा होता न, तो सीधा नहीं उतरता। थोड़ा यहाँ चिपका रह जाता। 'मेरी वाणी' है, अगर ऐसा हुआ होता न, तो थोड़ा चिपक जाता।

प्रश्नकर्ता : फिर भी यह वाणी अंदर उतर जाने का इसके अलावा और भी कोई विशेष कारण लगता है।

दादाश्री : 'प्योर' समझ में सुख है। यह प्योर माल है, शुद्ध माल है न! 'माइ स्पीच' ऐसा भी नहीं कहा है न! यह 'माइ स्पीच' है, ऐसा नहीं है। यह प्रत्यक्ष सरस्वती है! यह सारा ही उसी का फल है। यदि कोई एक शब्द भी सुनकर गया और यदि उसमें गहरा उतरे तो उसका भी मोक्ष हो जाए, ऐसा यह ज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : अब आपके सभी वाक्य यों फटाफट समझ में आ जाते हैं।

दादाश्री : सभी समझ में आ जाते हैं और समझ में आए बगैर रहेंगे नहीं। यह सारा तो एक्ज़ेक्ट है। हम कहते हैं न कि यह टैपरिकॉर्डर बोल रहा है और हम सुन रहे हैं। हम ज्ञाता-दृष्टा रहते हैं।

निर्ममत्व से शुद्धिकरण

फोटोवाली सरस्वती, शास्त्रों या पुस्तकोंवाली सरस्वती, तो परोक्ष सरस्वती हैं। अगर प्रत्यक्ष सरस्वती के दर्शन करने हों तो यहाँ यह वाणी सुनो, तो हो जाएँगे!

हमारा अगर एक ही वाक्य सुने और यदि पचा ले, तो बहुत हो गया। कृपालुदेव ने कहा है कि 'यदि ज्ञानीपुरुष का एक भी शब्द पचा लिया, तो मोक्ष में ले जाएगा।' ज्ञानीपुरुष के शब्द में, उसका वज़न तो देखो! मुक्त पुरुष की वाणी मुक्त होती है। उस मुक्त वाणी को देखो! वह 'विदाउट एनी पोइज़न' (संपूर्ण विष रहित) होती है। भगवान महावीर ने जो कुछ कहा था, वह

भी प्रत्यक्ष सरस्वती है! अभी तक इम्प्योर ही किया है, जो सुना है वह भी सारा इम्प्योर। प्योरिटी (मैल रहित) में तो अभी एक घंटे से सत्संग में आए हो। बाकी कभी प्योरिटी देखी थी क्या?

ऐसी प्योर बातें कौन करेगा? जिनमें निर्ममत्व है, जिन्हें किसी भी प्रकार की ममता नहीं है वही ऐसी प्योर बातें कर सकते हैं। बाकी सब प्योर बातें नहीं कर सकते। रक्षण ही करते हैं। संतपुरुष हैं बेचारे लेकिन उन्हें जितना समझ में आता है उतना करते हैं और बाकी का सारा रक्षण करते हैं!

प्योर निरावृत वाणी

प्रश्नकर्ता : कोई व्यक्ति वाणी बोले तो कहता है 'मैं बोला था' जबकि दादा कहते हैं कि, 'मैं ऐसा नहीं मानता हूँ कि मैं बोला था। यह टैपरिकॉर्डर बोल रहा है।' लेकिन इसमें करेक्टनेस (सही) कहाँ से आ जाती है? वह क्या चीज़ है?

दादाश्री : जब तक ऐसा कहते हैं कि 'मैं बोला था,' तब तक वाणी उतनी ही आवरणवाली होती है। उसमें स्पष्टता नहीं होती। वह एक्ज़ेक्टनेस नहीं बताती जबकि 'यह' एक्ज़ेक्टनेस बताती है। यह निरावरण वाणी है न, इसलिए प्योर है। यह तो प्योर भाषा है न, बस। प्योरिटी होती है न! एक-एक शब्द प्योर होता है। उसमें बिल्कुल भी क्रोध नहीं होता, मान नहीं होता, कपट नहीं होता। ऐसा कुछ भी नहीं होता।

कितने ही लोग आते हैं, और सभी खुश हो जाते हैं! क्योंकि ये प्योर, महावीर की बातें हैं। प्योरिटी मिलती नहीं न इस काल में।

हमारी वाणी अंतिम प्रकार की निकलती है और निर्विवादी है, वर्ना विवाद ही होते हैं। सभी जगह पर विवादी वाणी होती है। व्यवहार शुद्धि के बगैर स्याद्वाद वाणी नहीं निकल सकती। पहले व्यवहार शुद्धि होनी चाहिए।

लघुतम पद से पूर्णता

हम में तो इगोइज़म खत्म हो चुका है। हम तो व्यवहार में लघुतम पुरुष हैं। इस दुनिया में हमसे छोटा और कोई जीव नहीं है और निश्चय में हम गुरुतम हैं, हमसे बड़ा भी कोई नहीं है। हम ऐसे लघुतम-गुरुतम पुरुष कहलाते हैं, जहाँ पर अपना काम हो जाता है।

इसलिए इन मन-वचन-काया से मैं बिल्कुल अलग रहता हूँ। अत: अगर इसे (अंबालाल को) कोई गालियाँ दे जाए, मारे, तब भी 'मुझे' कोई परेशानी नहीं होगी न! लोग मुझे पहचानते ही नहीं, फिर मुझे गाली कैसे दे सकते हैं। और जो मुझे पहचानते हैं वे तो परमात्मा के रूप में पहचानते हैं। हमें किसी भी प्रकार की भीख नहीं है, इसलिए हमें यह पद मिला है।

यहाँ तो, मैं जिस पद पर बैठा हूँ, उसी पद पर आपको बिठाता हूँ। हम में जुदाई नहीं है। आपमें और मुझमें कोई जुदाई नहीं है। आपको ज़रा जुदाई लगेगी, मुझे जुदाई नहीं लगती। क्योंकि आपमें मैं ही बैठा हुआ हूँ, उनमें भी मैं बैठा हुआ हूँ, फिर मुझे जुदाई कहाँ रही? बाकी, यहाँ गुरुपूर्णिमा नहीं होती। यह 'गुरु' ही नहीं हैं और 'पूर्णिमा' भी नहीं है! यह तो लघुत्तम पद है! यहाँ तो यह सब आपका ही स्वरूप हैं, अभेद स्वरूप है!

प्योर ज्ञान से बुद्धि ब्लंट

प्रश्नकर्ता : यह ज्ञान ऐसा है न कि खुद को इस (फाइल नं-1) से इतना अधिक अलग

रखता है कि खुद ही खुद के दोष ढूँढ निकालता है कि कहाँ पर भूल रह गई है। क्योंकि यह पूरा जागृत विज्ञान है।

दादाश्री : हाँ, यह ज्ञान तो 500 साल के बाद भी चमक उठेगा! लोग कहेंगे कि क्या था यह ज्ञान! तभी तो आज मैंने कहा है न कि, लाओ सभी उपनिषद, चार वेद वगैरह सभी कुछ वापस नए बनाकर दूँगा। सरल बन जाएँगे। 'आई विदाउट माई इज़ गॉड,' ऐसा यदि साफ-साफ कह दिया होता तो इनका निबेड़ा आ जाता। इतना ही जान लिया होता तो निबेड़ा आ गया होता। यह तो देखो कितना उलझाया हुआ है! कहते हैं, 'भगवान ने जन्म दिया।' भगवान अलग और हम अलग। तो मेल कब खाएगा?

यह ज्ञान, अक्रम विज्ञान है। इसलिए मैंने सभी से साफ-साफ कह दिया है न कि सभी ज्ञान, बुद्धि की सुनते हैं लेकिन यह जो ज्ञान है वह ज्ञान बुद्धि की नहीं सुनता। उसे तो मारकर निकाल देता है। ऐसा कहता है, 'हाँ, क्या समझती है?' अर्थात् इस बुद्धि की नहीं सुनता ऐसा है यह ज्ञान, यह अक्रम विज्ञान! अभी तक तो कहते हैं कि 'यह आपने नया क्या किया?' क्रम में अक्रम डाला। अरे भाई, तू देख तो सही, बुद्धि की नहीं सुनता, ऐसा है यह ज्ञान! क्या सिर्फ शब्द ही जोड़ा है इसमें?

प्रश्नकर्ता : आपके एक ही जवाब से उसकी बुद्धि फ्रेक्चर हो जाएगी।

दादाश्री : फ्रेक्चर हो जाएगी बुद्धि। ये बुद्धिवाले यों चिमटे लगाते हैं। इसीलिए तो मैं चार ही शब्द पूछता हूँ कि 'आप वास्तव में कौन हो?' चुप! बड़े ऑफिसर हो तब भी। बुद्धि को फ्रेक्चर कर देता है, एकदम से। अर्थात् बुद्धि की भी नहीं सुनता है यह ज्ञान। वर्ना हर एक ज्ञान बुद्धि की सुनता है। यह विज्ञान है, यह नहीं सुनता।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपके पास यहाँ पर दो चीज़ें होती हैं। एक तो चाहे कैसे भी क्वेश्चन पूछे जा सकते हैं या तो आप ऐसा क्वेश्चन उसे पूछते हैं न कि उसकी बुद्धि पूरी तरह से ब्लंट हो जाती है।

दादाश्री : हाँ, ब्लंट हो जाती है। प्रश्न पूछता हूँ तो वह ब्लंट हो जाता है क्योंकि यह मालिकी रहित वाणी है।

सब से अंतिम, ज्ञान की प्योरिटी

प्रश्नकर्ता : दादा, मतलब यह ज्ञान जो बुद्धि की नहीं सुनता, इसके पीछे कौन सा रहस्य छुपा है?

दादाश्री : इसमें अगर थोड़ी सी भी मिलावट होती तो, बुद्धि की सुने बगैर रहता ही नहीं। इसमें बिल्कुल परिपूर्णता है, प्योर है।

प्रश्नकर्ता : परिपूर्णता अर्थात्?

दादाश्री : प्योर, बिल्कुल भी इम्प्योरिटी नहीं।

प्रश्नकर्ता : नहीं, मतलब यह किस सेन्स (अर्थ) में?

दादाश्री : ज्ञान की अंतिम प्रकार की प्योरिटी है यह। इससे आगे अब और कोई प्योरिटी है ही नहीं। ज्ञान ही आत्मा है तो फिर आत्मा में क्या प्योरिटी (होनी) बाकी रही, कहो?

प्रश्नकर्ता : आपने जो ज्ञान की प्योरिटी कही है इसका मतलब, आपने जो कहा है कि 'हम जब केवलज्ञान स्वरूप में रहते हैं तब महात्माओं आपको शुद्धात्मा का लक्ष बैठता है।'

दादाश्री : प्योर क्या है वह समझ में आ

गया है इसलिए इम्प्योर के मालिक नहीं होना है।

इसलिए बेकार की हाय-हाय नहीं करनी है। हमसे यही सीख लेना है। अपने पास क्यों बिठाए रखता हूँ कि देख-देखकर... हमारा जीवन देखो, आँखें देखो। आँखों में क्या रहता है? सँपोलिए खेलते हैं? तो कहते हैं, 'नहीं, सँपोलिए नहीं खेलते अंदर?' तो क्या खेलते हैं? तो कहते हैं, 'वीतरागता खेलती है।' वह सीखो। वाणी ऐसी होती है कि दिल को ठंडक हो जाती है, अत: यह सब साथ में बैठने से होगा। पढ़ने से नहीं होगा।

निर्मल को देखकर हुआ जा सकता है निर्मल

प्रश्नकर्ता : ऐसा जो कहा है कि ज्ञानी के पास पड़े रहो, तो क्या यही सब देखना है?

दादाश्री : हाँ, उनकी सहजता पूरे दिन देखने को मिलेगी। कैसी सहजता! कैसी निर्मल सहजता है! कितने निर्मल भाव हैं! और अहंकार रहित दशा कैसी होती है, बुद्धि रहित दशा कैसी होती है, यह सब देखने को मिलता है। अहंकार रहित और बुद्धि रहित दशा, ये दो दशाएँ तो कहीं देखने मिलती ही नहीं न! हर कहीं बुद्धिशाली! वे अगर यों बात करें न, तब भी उनका मुँह चढ़ा रहता है! कुछ भी सहज नहीं होता। फोटो खींची जाती है तब नाक चढ़ जाती है! और अगर फोटोवाला हमें देखें, तो फोटो नहीं लेना हो तब भी फोटो ले लेता है कि यह फोटो लेने जैसे व्यक्ति हैं! वह सहजता ढूँढता है। नाक की सख्ती देखता है तो फोटो सहज नहीं आती।

हार्टिली वाणी से होता है अंदर शुद्धिकरण

तो इस तरफ जो बुद्धि की खेंच है तो वह संसार को सुंदर बना देती है। बहुत फर्स्ट क्लास सुंदर कर देती है। लेकिन कहती है, 'वहाँ पर तो नहीं जाने दूँगी।' प्रज्ञा इस तरफ खींचती है। प्रज्ञा कहती है, 'हार्टिली इंसान हो तो मैं उसे हेल्प करूँगी, आगे ले जाऊँगी, ठेठ तक ले जाऊँगी, मोक्ष में ले जाऊँगी।' हमारी बुद्धि चली गई है इसीलिए तो हमारा हार्ट इतना प्योर है न! मुझे कह रहे थे कि हार्टिली वाणी.....

प्रश्नकर्ता : *'हृदीये स्पर्शी सरस्वती, आ वाणी ल्हावो अनोखो छे।'* वाणी का ऐसा असर है कि बुद्धि जिस पज़ल को सॉल्व नहीं कर सकती, उसे यह वाणी सॉल्व कर देती है।

दादाश्री : प्रत्यक्ष सरस्वती कहलाती है यह वाणी। इस प्रत्यक्ष सरस्वती को सुनने से तो सभी रोग निकल जाते हैं। कान बिल्कुल साफ हो जाते हैं, प्योरिटी आ जाती है। जैसे-जैसे सुनता जाए, वैसे-वैसे प्योरिटी आती जाती है। जितनी बार सुना न, उतनी बार अंदर से सारा शुद्धिकरण होता जाता है। सुनते ही पापों का नाश होने लगता है। मुक्ति देती है, चिंता नहीं होती, *उपाधि* (बाहर से आनेवाला दु:ख) नहीं होती।

तीर्थंकरों का मालिकी रहित विज्ञान

प्रश्नकर्ता : आपकी वाणी में 6 तत्त्वों की बात बताई गई है, यह शास्त्रों की बात है या दादा की खोज है?

दादाश्री : नहीं! दादा की खोज नहीं है। दादा को तो कुछ आता ही नहीं है। वास्तव में एक्ज़ेक्टली ये सब 24 तीर्थंकरों का हैं और 24 तीर्थंकरों का भी उनका खुद का नहीं था। ऐसा होता तो वे कहकर जाते कि 'यह विज्ञान हमारा है।' लेकिन यह परंपरा से चला आ रहा है। इसलिए यह मालिकी रहित ज्ञान है।

कृपालुदेव से भी बड़े-बड़े कई मुनि हो

चुके हैं। कपिल मुनि जैसे भी श्रेय नहीं लेते थे। वे कहते थे कि 'हम तो सर्वज्ञ का बताया हुआ बता रहे हैं।'

यह भगवान महावीर की बात है, 24 तीर्थंकरों की बात हैं। मेरी बातें तीर्थंकरों की बातें हैं। जो अनादि से चला आया है, वही का वही ज्ञान है यह। सिर्फ इसका तरीका अलग है, काल की वजह से। अभी क्रमिकमार्ग से जा पाएँ ऐसा है नहीं, इसलिए अक्रम आया है। अक्रम ज्ञान से दृष्टि सम्यक होती है और अगर ऐसे छुड़वानेवाले मिल गए हैं तो क्यों न हम अपना काम निकाल लें।

ऐसे छुड़वानेवाले मिलते ही नहीं न! वर्ल्ड में शायद ही कभी होते हैं। एक ही व्यक्ति ऐसा होता है। बेजोड़ होता है, जिसकी कोई तुलना नहीं होती, और वह ऐसा होता है कि उसे पहचाना नहीं जा सकता। यह तो मेरे मारफत सारी बातें निकल रही हैं। अर्थात् आपको तो सिर्फ आज्ञापालन करना है। ये पाँच वाक्य महावीर के भी नहीं हैं, दादा के भी नहीं हैं, ये तो वीतरागों के समय से चले आ रहे हैं। दादा तो निमित्त हैं।

कल्याण के लिए ज़रूरत है सिर्फ प्योरिटी की

एक 'एसे' (निबंध) लिखकर लाना कि जीवन किसलिए जीना है! उसकी पॉज़िटिव-नेगेटिव दोनों साइड लिखकर लाना। हमें प्रगति तो करनी पड़ेगी न? यों सामान्य व्यक्ति की तरह कब तक बैठे रहेंगे? मुझे 13वें साल में असामान्य बनने का विचार आया था। सामान्य अर्थात् मुझे तो सब्ज़ी-भाजी जैसा लगा था। सामान्य व्यक्ति को जो तकलीफें आती हैं, वैसी कोई तकलीफें असामान्य मनुष्य को नहीं आतीं। सामान्य मनुष्य किसी की हेल्प नहीं कर सकता। जबकि असामान्य मनुष्य हेल्प के लिए ही होता है। इसीलिए उसे जगत् एक्सेप्ट करता है।

प्रश्नकर्ता : असामान्य मनुष्य की परिभाषा क्या है?

दादाश्री : असामान्य अर्थात् खुद जगत् के सभी लोगों को, हर एक जीव-मात्र के लिए हेल्पफुल हो जाए। खुद जब स्वतंत्र हो जाए, प्रकृति से परे हो जाए, तब असामान्य बनता है। सामान्य मनुष्य लाचारी भी अनुभव करता है, 3 दिन तक भूखा रखे तो लाचारी अनुभव करता है। इसलिए असामान्य बनना। फिर तो खुद के सुख की सीमा ही नहीं रहेगी।

यदि कोई बड़ा व्यक्ति आपको दिखाई दे तो आपको लघुताग्रंथि उत्पन्न होती है, आप एकदम प्रभावित हो जाते हो। अरे! वह सामान्य व्यक्ति ही है, फिर उससे क्या प्रभावित होना?

निखालस (ट्रान्सपेरेन्ट) हो गए अर्थात् दुनिया का किसी भी प्रकार का डर रखने की ज़रूरत ही नहीं रहती। उसका तो 'ओटोमेटिकली' रक्षण होता रहता है, उसका कोई भक्षण कर ही नहीं सकता। 'स्वरूप ज्ञान' मिलने के बाद उसकी पूर्ण दशा उत्पन्न होगी, तब कोई भी भक्षण नहीं कर सकेगा, कोई नाम भी नहीं दे सकेगा।

लोगों का कल्याण कब होता है? जब हम शुद्ध हो जाएँ तब! बिल्कुल शुद्ध, प्योर। पूरे जगत् को क्या आकर्षित करता है? प्योरिटी! प्योर चीज़ ही जगत् को आकर्षित करती है।

तू पुस्तक नहीं पढ़ेगा और कुछ नहीं समझेगा तो भी मुझे आपत्ति नहीं है लेकिन तू निखालस बन, एकदम प्योर, ट्रान्सपेरेन्ट, सच्चा निखालस बन। फिर निखालिस को शोभा दे, वैसा सारा ज्ञान अपने आप ही उद्‌भव हो जाएगा।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

17-19 मई : पूज्य श्री के सानिध्य में आप्तसिंचन की बहनों के लिए 3 दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। शिविर के दौरान इन्फोमल सत्संग, पूज्य श्री द्वारा व्यक्तिगत मार्गदर्शन और उनके दर्शन से साधिका बहनों की ज्ञानजागृति की बैटरी रिचार्ज हो गई। पूज्य श्री भादरण त्रिमंदिर और भद्रकाली माता जी के मंदिर में दर्शन के लिए गए। भादरण के महात्माओं के लिए विशेष दर्शन का कार्यक्रम भी आयोजित हुआ।

21-23 मई : सुरत में रखे गए पूज्य श्री के सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम को बहुत ही सुंदर रिस्पोन्स मिला। लगभग 700 सेवार्थी प्रचार और कार्यक्रम दौरान उत्साहपूर्वक सेवा में उपस्थित रहे और नए मुमुक्षु ज्ञान लेने के लिए प्रेरित हों इसलिए आप्तपुत्र सत्संग भी आयोजित हुआ। ज्ञानविधि दौरान 3650 मुमुक्षुओंने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्य श्री के आगमन के दौरान वातावरण महोत्सव जैसा रहा। यजमान महात्मा की बिल्डिंग में भी ज़्यादा करके महात्मा ही थे जो पूज्य श्री के दर्शन प्राप्त करके गद्‌गद् हो उठे। GNC के बच्चों व युवाओं ने पूज्य श्री का स्वागत बहुत उमंग से किया।

27-31 मई : अडालज संकुल के दादानगर में आयोजित हिन्दी शिविर ने इस बार रिकॉर्ड ब्रेक 2500 महात्मा व मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही। शिविर के दौरान 'प्रतिक्रमण' पारायण, WMHT-MMHT के विशेष सत्संग, गरबा, भक्ति, पूज्य श्री के चरण स्पर्श दर्शन, आप्तपुत्रों-पुत्रियों द्वारा ग्रूप सत्संग और व्यक्तिगत मार्गदर्शन, मंदिर में प्रक्षाल-पूजन-आरती, पूज्य श्री के सत्संग की स्पेशल सीडी वगैरह विविध कार्यक्रमों का महात्माओं को लाभ प्राप्त हुआ। कई सारे सेन्टर के महात्माओं ने पूज्य श्री को अपने शहर में सत्संग-ज्ञानविधि के लिए पधारने का निमंत्रण दिया। पूज्य श्री के सामाधानकारक जवाब से महात्मा तृप्त हुए। इस शिविर के अवसर पर पूज्य श्री द्वारा पंजाबी और उडीया भाषा में पुस्तकों का विमोचन किया गया। ज्ञानविधि में 750 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। शिविर के दौरान अडालज में लाए गए बड़ौदा के सीमंधर स्वामी भगवान के दर्शन पूज्य श्री और सभी महात्माओं ने बहुत भाव से किए और दर्शन करनेवाले सभी मुमुक्षुओं का आत्यंतिक आत्मकल्याण हो ऐसी शुभ भावना प्रकट की। अंतिम दिन अंबाजी-महेसाणा की एक दिवसीय यात्रा का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 1300 शिविरार्थी महात्मा आए। अंबाजी में दर्शन के बाद महात्माओं को पूज्य श्री के सत्संग का विशेष लाभ प्राप्त हुआ। महेसाणा में भोजन के पश्चात श्री सीमंधर स्वामी के जिनालय के दर्शन करके महात्माओं ने गरबा का आनंद उठाया। मंदिर के ट्रस्टिओं ने पूज्य श्री का अभिवादन किया।

29-30 मई : वडोदरा में श्री सीमंधर स्वामी भगवान के आने पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। तभी वहाँ बगी में दादाश्री की प्रतिमा भी दर्शन के लिए रखी गई थी। इस यात्रा में लगभग 1000 महात्मा उल्लासभर जुड़े। फिर दूसरे दिन भगवान की प्रतिमा क्रेन की मदद से त्रिमंदिर में प्रस्थापित की गई और वहाँ उपस्थित महात्माओं द्वारा आनंद व उल्लास से गरबा-भक्ति-प्रक्षाल-पूजन और आरती की गई।

3-4 जून : गुजरात के सभी सेन्टरों के कॉर्डिनेटरों के लिए सेफ्रोनी-महेसाणा में दो दिवसीय वर्कशोप का आयोजन किया गया। पूज्य श्री द्वारा सत्संग, सेवा-नोबिलिटी-सिन्सियारिटी-कर्तापन-विशेषता वगैरह टॉपिक पर सत्संग हुए। नए महात्माओं को किस तरह विविध एक्टिविटी द्वारा प्रोत्साहित करें, सेवा में नोबिलिटी रखकर ज़्यादातर लोगों को प्रेरित करें तथा भविष्य के लिए नए प्रतिनिधिओं कैसे तैयार करें, इस बात पर उन्होंने ज़ोर दिया। ब्रह्मचारी साधकों ने सुंदर नाटक द्वारा 'विशेषता' व 'मेरापन' की बात को प्रस्तुत किया। पूज्य श्री के सानिध्य में मोर्निंग वॉक और व्यक्तिगत मार्गदर्शन और चरण स्पर्श का अवसर मिलने से कॉर्डिनेटर्स आनंदविभोर हुए।

7-10 जून : पूज्य श्री के सानिध्य में आप्तसंकुल के 120 भाईओं और बहनों की 4 दिवसीय रिट्रीट दक्षिण भारत के प्रसिद्ध हिल स्टेशन ऊटी पर आयोजित की गई। इस बार 'संकुल परिवार' नामक पारिवारिक भावनात्मक थीम आयोजित की गई थी। पहले दिन इस थीम पर एक्टिविटी हुई। दूसरे दिन पूज्य श्री के साथ भाईओं व बहनों के लिए अलग-अलग सेशन रखा गया। तीसरे दिन पूज्य श्री ने 'दादा दरबार' के अंतर्गत सभी साधकों से बातचीत करके उनको मार्गदर्शन किया। रात को सत्संग, अंताक्षरी और नाटक जैसी प्रवृत्तियों का साधकों ने आनंद उठाया। साधकों ने कुदरती वातावरण के बरसाती माहोल में जंगल में वॉक, एग्रीटूर, इनडोर व आउटडोर गेम का भी आनंद उठाया।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

उत्तर भारत

जयपुर	**दि.** 14-15 अगस्त	**संपर्क :** 8233363902
दिल्ली	**दि.** 15 अगस्त	**संपर्क :** 9810098564
दिल्ली	**दि.** 18 सितम्बर	**संपर्क :** 9810098564
सोनिपत	**दि.** 20 सितम्बर	**संपर्क :** 9728310007
जालंधर	**दि.** 24-25 सितम्बर	**संपर्क :** 9814063043

उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड

हरिद्वार	**दि.** 21 सितम्बर	**संपर्क :** 9719415074
लखनौ	**दि.** 22 सितम्बर	**संपर्क :** 8090177881
गोरखपुर	**दि.** 23 सितम्बर	**संपर्क :** 7309061683
वाराणसी	**दि.** 24-25 सितम्बर	**संपर्क :** 9452710927
अलाहाबाद	**दि.** 26 सितम्बर	**संपर्क :** 9335889980
कानपुर	**दि.** 27 सितम्बर	**संपर्क :** 9452525981

छत्तीसगढ़

डोंगरगढ	**दि.** 9 सितम्बर	**संपर्क :** 8349545600
भिलाई	**दि.** 10-11 सितम्बर	**संपर्क :** 8349545600
राजनंदगाँव	**दि.** 12 सितम्बर	**संपर्क :** 9425530470
दुर्ग	**दि.** 13 सितम्बर	**संपर्क :** 7046940624
भिलाई	**दि.** 14-15 सितम्बर	**संपर्क :** 8349545600
रायपुर	**दि.** 17-18 सितम्बर	**संपर्क :** 9329523797
महामसुद	**दि.** 19 सितम्बर	**संपर्क :** 8889944333
रायगढ़	**दि.** 20 सितम्बर	**संपर्क :** 9893569548
बिलासपुर	**दि.** 21 सितम्बर	**संपर्क :** 9425530470

मध्यप्रदेश

भोपाल	**दि.** 14-15 अगस्त	**संपर्क :** 9425024405

महाराष्ट्र

नागपुर	**दि.** 8 सितम्बर	**संपर्क :** 9970059233
अकोला	**दि.** 16 सितम्बर	**संपर्क :** 9422403002
अमरावती	**दि.** 17-18 सितम्बर	**संपर्क :** 9422335982
सतारा	**दि.** 20 सितम्बर	**संपर्क :** 9421212685
कोल्हापुर	**दि.** 21 सितम्बर	**संपर्क :** 9960787776
सांगली	**दि.** 22 सितम्बर	**संपर्क :** 9423870798
सोलापुर	**दि.** 23 सितम्बर	**संपर्क :** 8421899781
पूणे	**दि.** 24-25 सितम्बर	**संपर्क :** 7218473468
अहमदनगर	**दि.** 26 सितम्बर	**संपर्क :** 9421836256
औरंगाबाद	**दि.** 27 सितम्बर	**संपर्क :** 8308008897
नासिक	**दि.** 28 सितम्बर	**संपर्क :** 9021232111
जलगाँव	**दि.** 29 सितम्बर	**संपर्क :** 9422354985

उड़ीसा-पश्चिम बंगाल-झारखंड

बरहामपुर	**दि.** 9 सितम्बर	**संपर्क :** 9853333355
भुवनेश्वर	**दि.** 10 सितम्बर	**संपर्क :** 8280073175
कटक	**दि.** 11-12 सितम्बर	**संपर्क :** 7809266474
संबालपुर	**दि.** 13 सितम्बर	**संपर्क :** 8658090042
राऊरकेरा	**दि.** 14 सितम्बर	**संपर्क :** 9437782924
टाटानगर	**दि.** 15-16 सितम्बर	**संपर्क :** 9431179590
कोलकाता	**दि.** 17-21 सितम्बर	**संपर्क :** 9830093230

दक्षिण भारत

बेलगाम	**दि.** 12-13 सितम्बर	**संपर्क :** 9945894202
हुबली	**दि.** 14-15 सितम्बर	**संपर्क :** 9739688818
हैदराबाद	**दि.** 16 सितम्बर	**संपर्क :** 9885058771
बेंगलोर	**दि.** 17-18 सितम्बर	**संपर्क :** 9590979099

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

चेन्नई **दिनांक :** 19 सितम्बर **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9380159957
स्थल : कच्छी मिलन होल, पुराना नं-142, नया नं-346, पुरुश्वालकम हाई रोड, अभिरामी सिनेमा के पास, प्रिन्स टावर.

ग्वालियर **दिनांक :** 16 सितम्बर **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9926265406
स्थल : के.एस. मेमरिल हाई स्कूल, गायत्री विहार कोलोनी, पिन्टो पार्क.

फरिदाबाद **दिनांक :** 17 सितम्बर **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9501009538
स्थल : सनातन धाम मंदिर, सेक्टर-9, कम्यूनिटी सेन्टर & गुरुद्वारा के पास.

गाजियाबाद **दिनांक :** 19 सितम्बर **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9968738972
स्थल : कोनार्क एनक्लेव, सेक्टर-17, 'E' ब्लोक, वसुंधरा, साँई मंदिर के पास.

पानीपत **दिनांक :** 21 सितम्बर **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9812131414
स्थल : मनोरंजन केन्द्र, NFL टाउनशीप, पानीपत.

कुरुक्षेत्र **दिनांक :** 22 सितम्बर **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9467763460
स्थल : भगवान परशुराम कोलेज, मेईन मार्केट, सेक्टर-5, हुडा, कुरुक्षेत्र.

चंदीगढ़ **दिनांक :** 23 सितम्बर **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9872188973
स्थल : गढ़वाल भवन, सेक्टर-29-A श्री साँई बाबा मंदिर के पास.

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30 , रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर मंगल से गुरु रात 10 से 10-30, शुक्र से रवि रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

Pujya Deepakbhai's USA Satsang Schedule 2016

Contact no. for all centers in USA : 1-877-505-DADA (3232) & email for USA - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & Email
26-Jul	Tue	Florence, AL	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Ralph C Bishop Community Center 201 S. Washington Ave Russellville, AL 35653	Ext 1033 florence@ us.dadabhagwan.org
27-Jul	Wed	Florence, AL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
27-Jul	Wed	Florence, AL	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
28-Jul	Thu	Florence, AL	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
29-Jul	Fri	Atlanta, GA	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Gujarati Samaj 5331 Royalwood parkway, Tucker, GA , 30084	Ext. 1011 atlanta@ us.dadabhagwan.org
30-Jul	Sat	Atlanta, GA	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
31-Jul	Sun	Atlanta, GA	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
31-Jul	Sun	Atlanta, GA	Gnanvidhi	3-30 PM	7-30 PM		
5-Aug	Fri	Chicago, IL	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Swaminarayan Temple@ 1020 Bapa Rd, Streamwood, IL 60107	Ext. 1005 chicago@ us.dadabhagwan.org
6-Aug	Sat	Chicago, IL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM	Swaminarayan Temple @ 21W Irving Park Rd, Itasca, IL 60143	
6-Aug	Sat	Chicago, IL	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
7-Aug	Sun	Chicago, IL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
9-Aug	Tue	Los Angeles, CA	Satsang	7-00 PM	9-30 PM	Sanatan Dharma Temple 15311 Pioneer Blvd. Norwalk CA 90650	Ext. 1009 losangeles@ us.dadabhagwan.org
10-Aug	Wed	Los Angeles, CA	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
10-Aug	Wed	Los Angeles, CA	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
11-Aug	Thu	Los Angeles, CA	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
12-Aug	Fri	San Jose, CA	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Oasis Palace 35145 Newark Blvd Newark, CA 94560	Ext. 1024 northcalifornia@ us.dadabhagwan.org
13-Aug	Sat	San Jose, CA	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
14-Aug	Sun	San Jose, CA	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
14-Aug	Sun	San Jose, CA	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		

Pujya Deepakbhai's Australia-Fiji-NZ-Malaysia Satsang Schedule 2016

Date	Day	City	From	To	Session Title	Venue	Contact No. & Email
9-Sep	Fri	PERTH	6-00 PM	8-00 PM	Satsang	Bendat Parent and Community Centre 36 Dodd St, Wembley Perth, WA 6014	+61 430148386
10-Sep	Sat	PERTH	10-00 AM	12-00 PM	Aptaputra Satsang		+61 425255677
10-Sep	Sat	PERTH	4-00 PM	7-30 PM	Gnanvidhi		+61 401367868
11-Sep	Sun	PERTH	4-30 PM	7-00 PM	Satsang		perth@au.dadabhagwan.org
12-Sep	Mon	SYDNEY	All Day	All Day	Mahatma Only Shibir	Mercure Gerringong Resort, 1 Fern street Gerringong, NSW 2534 | Australia	+ 61421127947
to			All Day	All Day			+ 61402179706
15-Sep	Thu		All Day	All Day			sydney@au.dadabhagwan.org
16-Sep	Fri	SYDNEY	7-00 PM	9-30 PM	Satsang	Sant Nirankari Satsang Bhawan, 166 Glendenning Road, Glendenning, NSW - 2761	+ 61421127947
17-Sep	Sat	SYDNEY	10-00 AM	12-00 PM	Aptaputra Satsang		+ 61402179706
17-Sep	Sat	SYDNEY	3-30 PM	7-00 PM	Gnanvidhi		+61449629797
18-Sep	Sun	SYDNEY	4-00 PM	7-00 PM	Satsang		sydney@au.dadabhagwan.org
18-Sep	Sun	SUVA, FIJI	6-00 PM	8-00 PM	Aptaputra Satsang	Shree Laxmi Narayan Mandir, 5 Holland Street, Suva, Fiji	+679 9313879
							dadabhagwanfiji@gmail.com
19-Sep	Mon	BA, FIJI	7-00 PM	9-00 PM	Aptaputra Satsang	Shree Radha Krishna Mandir, Ganga Singh Street, Ba, Fiji	+679 9313879
							dadabhagwanfiji@gmail.com
20-Sep	Tue	LAUTOKA, FIJI	7-30 PM	9-30 PM	Satsang	Fiji Girmit Centre Hall, Tavakubu Road, Lautoka, Fiji	+679 9313879
21-Sep	Wed	LAUTOKA, FIJI	7-30 PM	10-00 PM	Gnanvidhi		+679 9447678
22-Sep	Thu	LAUTOKA, FIJI	7-30 PM	9-30 PM	Satsang		dadabhagwanfiji@gmail.com
23-Sep	Fri	ROTORUA, NZ	8-00 PM	9-30 PM	New Zealand Shibir	Holiday Inn, 10 Tryon St, Whakarewarewa, Rotorua 3043 New Zealand	+64 21 037 6434
24-Sep	Sat	ROTORUA, NZ	All Day	All Day	New Zealand Shibir		+64 9 9486119
25-Sep	Sun	ROTORUA, NZ	3-00 PM	6-30 PM	Gnanvidhi		info@nz.dadabhagwan.org
26-Sep	Mon	ROTORUA, NZ	All Day	All Day	New Zealand Shibir		
28-Sep	Wed	MELAKA	7-45 PM	10-00 PM	Satsang	Gujarati Vanik Sangh, 99-101 Jalan Banda Kaba, 75000 Melaka, Malaysia	+60126385035
							info@sg.dadabhagwan.org
29-Sep	Thu	MELAKA	7-45 PM	10-00 PM	Satsang	Malacca Gujarati Samaj, No 186 Jalan Ujong Pasir, 75050, Melaka, Malaysia	+60126385035
30-Sep	Fri	MELAKA	6-30 PM	10-00 PM	Gnanvidhi		info@sg.dadabhagwan.org

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

20 अगस्त (शनि) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **21 अगस्त** (रवि), दोपहर 4-30 से 7 - **ज्ञानविधि**

25 अगस्त (गुरु) रात 10 से 12 - **जन्माष्टमी** के अवसर पर विशेष भक्ति का कार्यक्रम

28 अगस्त (रवि) सुबह 9 बजे से - **पूज्यश्री के दर्शन** का विशेष कार्यक्रम

29 अगस्त से 5 सितम्बर (सोम से सोम) **पर्युषण पारायण - आप्तवाणी 13 (पू.)** पर **वाचन-सत्संग**

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 7 अगस्त 2016 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

2) पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-13 (पू.) (गुजराती) पर वाचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते है।)

3) ओढ़ने-बिछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ।

4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

पूणे

21 अक्तूबर (शुक्र), शाम 5-30 से 8-30 - **महात्माओं के लिए विशेष सत्संग**

22 अक्तूबर (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग**

23 अक्तूबर (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : गणेश कला क्रिडा मंच, नेहरु स्टेडियम केम्पस, स्वारगेट बस स्टेशन के पास. **संपर्क :** 7218473468

24 अक्तूबर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग, स्थल के लिए संपर्क :** 7218473468

परम पूज्य दादा भगवान का 109वाँ जन्मजयंती महोत्सव - वलसाड शहर में

उद्घाटन समारोह : 9 नवम्बर,

सत्संग शिविर : दि. 10 से 12 नवम्बर

ज्ञानविधि : दि. 12 नवम्बर,

जन्मजयंती : दि. 13 नवम्बर

स्थल : आई.पी. गांधी हाईस्कूल के सामने, वांकी नदी के पास, जुजवा गाँव, वलसाड-धरमपुर रोड.

संपर्क : 9924343245

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

जुलाई 2016
वर्ष - 11 अंक - 9
अखंड क्रमांक - 129

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set.- 1
on 15th of each month.

ज्ञानी मिल जाएँ तो सब काम हो जाएँ

'ज्ञानीपुरुष' के पास जाने के बाद भी यदि मेहनत करनी पड़े तो वहाँ (सत्संग में) जाए ही क्यों? 'ज्ञानीपुरुष' के पास तप, त्याग, मेहनत कुछ भी नहीं करना होता और 'ज्ञानीपुरुष' को किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं होती। वे खुद ही पूरे ब्रह्मांड के स्वामी हैं, उन्हें किस चीज़ की ज़रूरत है? 'ज्ञानीपुरुष' एक क्षण भी इस देह के स्वामित्व भाव में नहीं रहते। जो एक क्षण के लिए भी देह का मालिक नहीं बनता, वह पूरे ब्रह्मांड का मालिक बनता है। ज्ञानी को तो किसी भी प्रकार की स्पृहा नहीं है। उन्हें तो आप यह जो हार पहनाते हो, उसकी भी ज़रूरत नहीं है बल्कि उन्हें उसका भार लगता है। यह तो आपके लिए है, आपको ज़रूरत हो तो हार पहनाओ। हार पहनाने से सांसारिक अड़चनें दूर हो जाती हैं। 'शूल का घाव सुई जैसा लगता है।' हम उसके कर्ता नहीं हैं, निमित्त हैं। 'ज्ञानीपुरुष' के नैमित्तिक चरण पड़ने से आपके लिए सब अच्छा ही होता है। 'ज्ञानीपुरुष' अर्थात् जिन्हें किसी भी प्रकार की भीख नहीं है; लक्ष्मी की, विषयों की, मान की, कीर्ति की, उन्हें किसी भी प्रकार की भीख नहीं होती है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.